ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 जून 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 18 जून 2017 से 24 जून 2017

आषाढ़ कृ. – 09 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 76, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. संस्था के 132 वें स्थापना दिवस पर पटियाला में हुआ 102 यूनिट रक्तदान

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड, पटियाला की 'आर्य युवा समाज' इकाई समय–समय पर समाज सेवा व मानव कल्याणकारी कार्य करती रहती है। इसी श्रृंखला में डी.ए.वी. संस्था के '132वें' स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर इसके द्वारा रक्तदान शिविर लगाया गया। जिसमें विद्यार्थियों के अभिभावकों व शिक्षकवृन्द ने उत्साह दिखाते हुए '102' यूनिट रक्तदान किया। स्टार रक्तदाता श्री देविंदर सिंह इस शिविर में मुख्य आकर्षक का केन्द्र बने रहे तथा श्री राजपाल (अधिकारी, आयकर विभाग) ने भी रक्तदान कर इस महायज्ञ में अपनी आहुति प्रदान की। इस मानव कल्याणकारी प्रकल्प को स्थानीय रजिन्द्रा अस्पताल के ब्लड बैंक से डॉक्टर संदीप कौर की सहयोगी टीम (डॉ. सतविंदर कौर, अमनदीप कौर, सतपाल सिंह, दारा

सिंह, माया राम व हरिश मल्होत्रा) के द्वारा पूरा किया गया। शिविर में डॉ. बलविंदर सिंह (सिविल सर्जन) व श्रीमती निशि भटनागर (डी.जी.एम., स्टेट बैंक ऑफ, इंडिया) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. बलविंदर सिंह ने डी.ए.वी. संस्था शिक्षा को एक महान समाज सेवी संस्था बताया।

शिविर के प्रारम्भ में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन किया गया; जिसमें प्राचार्य शिक्षकवृन्द व विद्यार्थियों ने विश्व कल्याण की कामना करते हुए यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान की। कार्यकारी प्राचार्या श्रीमती नीरा खुराना ने मुख्य अतिथि, एवं अन्य अतिथिगण का स्वागत किया तथा रक्तदाताओं का धन्यवाद प्रकट करते हुए अपने सम्बोधन में कहा, "रक्तदान–महादान है किसी जरूरतमंद को समय पर रक्त उपलब्ध करवाकर हम उसे जीवन प्रदान कर सकते है।" उन्होंने रक्तदाताओं से आग्रह किया कि वे समाज के अन्य लोगों को भी ऐसे कल्याणकारी आयोजनों में बढ़–चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित करे। इस पावन अवसर पर ठंडे व मीठे पानी की छबील लगाई गई जिसे पीकर हजारों लोगों ने भीषण गर्मी से राहत पाकर आनन्द अनुभव किया।

मुख्य अतिथि ने रक्तदाताओं का धन्यवाद प्रकट करते हुए उन्हें प्रमाण पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया तथा इस शिविर को सफल बनाने के लिए डॉ. टीम, डॉ. सोनिया, 'आर्य युवा समाज' व 'एन.सी.सी.' के सदस्यों एवं स्वयं सेवकों तथा शिक्षकवृन्द के सहयोग की सराहना की।

डी.ए.वी. समाना में नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 2 जून को डी.ए.वी. स्कूल, समाना के प्रांगण में सात दिवसीय नैतिक चरित्र निर्माण शिविर का शुभ आरंभ किया गया। इस शिविर में छठीं, सातवीं एवं नौवीं के छात्रों ने भाग लिया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण करना एवं उन्हें मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाने के साथ सुव्यवस्थित जीवन शैली को अपनाना रहा। सर्वप्रथम सुबह 8 बजे से सुबह 9 बजे तक योग प्रशिक्षक श्री रामफल मैहला द्वारा छात्रों

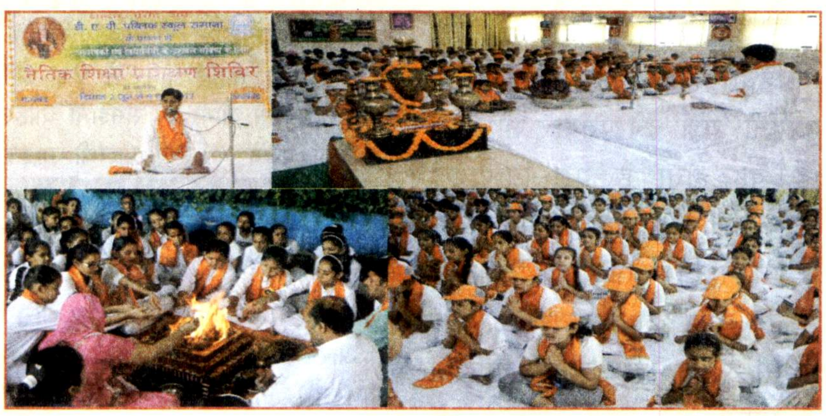

को योगासन अभ्यास करवाया गया। तत्पश्चात वैदिक हवन के साथ भजन एवं प्रार्थना भी करवाई गई। वैदिक साहित्य के विद्वान एवं शिक्षाविद आचार्य दीपचंद शास्त्री ने अपने व्याख्यान द्वारा छात्रों को राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने, सादा जीवन उच्च विचार एवं सदाचारी होने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा ने मुख्य अतिथि का हार्दिक अभिनंदन करते हुए छात्रों के चरित्र निर्माण पर बल दिया एवं छात्रों को समाज सेवा के प्रति जागृत किया। अंत में शान्ति पाठ के माध्यम से चरित्र निर्माण शिविर का समापन हुआ।

दयानन्द कॉलेज अजमेर में हुआ हर्बल गार्डन का उद्घाटन

भारतीय परिवेश में उपलब्ध बहुमूल्य औषधीय पौधे व बूटियां सामान्य जीवन व विशेष चिकित्सीय परिस्थितियों में बेहद उपयोगी हैं। वर्तमान समय में उनके प्रति उदासीनता व अज्ञानता हमारी भावी पीढ़ी के लिए नुकसानदायक साबित हो सकती है। उक्त उदागर श्री उमेश गर्ग, जोनल मैनेजर, यूको बैंक ने दयानन्द कॉलेज में नव निर्मित हर्बल गार्डन का उद्घाटन करते हुए बतौर मुख्य मेहमान कहे। उन्होंने कहा कि अपनी जड़ों से जुड़े रहना व अपनी

प्राकृतिक संपदा को स्वयं व विश्व कल्याण के लिए उपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को इस तरह के प्रयोगों से सीख लेनी चाहिए। प्राचार्य डॉ. अनूप कुमार ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि कॉलेज में कृषि व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों व जनता के लिए ज्ञान का स्रोत होगा। उन्होंने बताया कि इस उद्यान में रूद्राक्ष, सीता, अशोक, चितरासी, रेसम, रूई, नाग, चम्पा, स्वर्ण वर्षा, अमेरिकन गुलाब, चंदन, रजत कण, लाल लसुड़ा जैसे दुर्लभ व खालिस भारतीय परिवेश के औषधीय पौधे लगाए गये हैं। डॉ. एम.एल. वर्मा ने उद्यान के विभिन्न हिस्सों में लगाए गये पौधों की उपयोगिता व प्रस्तावित रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। इस आयोजन में कॉलेज के टीचिंग, नॉन टीचिंग स्टॉफ के सदस्यों ने पूरी भागीदारी निभायी।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह – रविवार, 18 जून 2017 से 24 जून 2017

आओ, देवों के मार्ग पर चलें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आ देवानामपि पन्थामगन्म, यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्।
आग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता, सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति।।

अथर्व 19.59.3

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अपि)** क्या **(देवानां)** देवों के **(पन्थां)** मार्ग पर **(आ–अगन्म)** [हम] चलें? [हाँ], **(यत्)** यदि **(तत् अनुप्रवोढुम्)** उस पर स्वयं को चलने में **(शक्नवाम)** समर्थ हों। **(अग्निः)** आत्मा **(विद्वान्)** विद्वान है, **(सः)** वह **(यजात्)** यज्ञ करे, **(सः)** वह **(इत्)** सचमुच **(होता)** होम–निष्पादक है। **(सः)** वही **(अध्वरान्)** यज्ञों को और **(सः)** वही **(ऋतून्)** ऋतुओं को **(कल्पयाति)** रचाये।

● आओ, हम देवों के मार्ग पर चलें। यज्ञ के तंतु से बंधे रहना ही देवों का मार्ग है। देखो, ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, ऋतु, संवत्सर आदि देव कैसे 'यज्ञ' के मार्ग पर चल रहे हैं। कभी उनके यज्ञ–पालन में व्यतिक्रम नहीं होता। शरीर में भी मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि देव कैसे संगठित हो देवयान का अवलम्बन कर शरीर–यज्ञ को चला रहे हैं। समाज में भी 'देव' पदवी को पाये हुए महापुरुष 'यज्ञ' के ही पथ पर चला रहे हैं। और, सबसे बड़ा देवों का देव परमात्मा भी निरन्तर देव–मार्ग पर चलता हुआ इस ब्रह्मांड–यज्ञ का सम्पादन कर रहा है। हम चाहते हैं कि हम भी इस देव–मार्ग के पथिक बनें। क्या तुम चाहते हो कि इस मार्ग पर चलना अति कठिन है, तलवार की धार पर चलने के समान है, अतः पहले शक्ति को तोल लो कि तुम इस पर स्थिर रह भी सकोगे या नहीं, उसके पश्चात् इस मार्ग पग बढ़ाना? सुनो, हमने अपने सामर्थ्य को भलीभांति परख लिया है। हमारा आत्मा 'अग्नि' है, अग्रणी है, तेज का पुंज है, ज्योतियों की ज्योति है। वह 'विद्वान्' है, देवों की राह पर चलना और चलाना जानता है। अतः हमें देव–प्रदर्शित यज्ञ–मार्ग से भटक जाने का कोई भय नहीं है। हम निश्चिंत होकर उसके हाथों में अपनी 'यज्ञ' की पतवार सौंप रहे हैं। वह 'होता' है, यज्ञ–निष्पादन में कुशल है, संस्कृत हवि का होम करने में निष्णात है। वह जानता है कि यज्ञ को 'अध्वर' अर्थात् हिंसा–रहित ही होना चाहिए। भद्रजनों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया यज्ञ यज्ञ नहीं है। हमारा आत्मा 'अध्वर' यज्ञों को रचाये और वही यह भी देखे कि किस यज्ञ के लिए कौन सी ऋतु, कौन सा समय उपयुक्त है, क्योंकि काल–अकाल का विचार किये बिना प्रारंभ किया गया या सफल नहीं होता। आओ, हम देव–पथ के पथिक बनें। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

जब उपासना करना चाहें, तब एकान्त शुद्ध प्रदेश में जाकर आसन लगाकर प्राणायाम कर, बाहर की बातों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि में, चित्त में, कण्ठ में आँखों में, शिखा में या पीठ की बीच की हड्डी में किसी स्थान पर टिकाकर आत्मा और परमात्मा को समझाकर मग्न हो जाने से अपने–आप को वश में करें।

गायत्री की जाप मन में करना चाहिए, केवल होठों और वाणी से नहीं। मनुष्य जब इन जापों को करता है तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। प्रतिदिन अपने ज्ञान और विज्ञान को बढ़ाकर वह मुक्ति तक पहुँच जाता है।

जैसे शीत में ठिठुरा हुआ मनुष्य आग के पास जाने से बच जाता है, जैसे इसके लिए सर्दी नहीं रहती, वैसे ही ईश्वर के समीप जाने से सब मल और दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म और स्वाभाव के अनुसार जीवात्मा के गुण और कर्म पवित्र हो जाते हैं।

–अब आगे

अब जाप के विषय में तीसरी बात सुनो! तीसरी आवश्यक बात है आसन। आसन का अभिप्राय है शरीर की वह अवस्था जिसको बदले बिना ही अधिक देर तक आप सुख से बैठ सकें। साधारण आसन है पद्मासन– पालथी मारकर बैठना; पालथी मार बैठना; पाँवो को, टाँगों के ऊपर करके। एक दूसरा आसन है सुखासन। इसमें केवल पालथी मारी जाती है, पाँव चाहे ऊपर हों या नीचे। किन्तु कई मनुष्यों के लिए तो पालथी मारना भी कठिन होता है। कई लोग कहते है, 'हमारे घुटने भी पीड़ा करते हैं।' कई कहते हैं, 'हमारी कमर में पीड़ा होने लगती है।' ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि जाप करने के लिए पालथी मारना आवश्यक नहीं। आसन का अभिप्राय केवल पालथी मारकर बैठना नहीं है। जिस प्रकार से भी तुम अधिक–से–अधिक काल तक सुखपूर्वक बैठ सको, वही तुम्हारा आसन है। और कुछ न हो सके तो शवासन में शव (मुर्दा) की तरह लेट जाने से भी काम चल जाता है। ऐसा करना हो तो कपड़े के छल्ले से दोनों पावों के अँगूठे आपस में जोड़कर बाँध देने चाहिएँ, जिससे कि वे हिलते न रहें। कमर में एक कपड़ा बाँधकर हाथ इसके अन्दर कर लेने चाहिएँ। बन जायेगा मुर्दा (शव), यह शवासन है। या, कोई भी दूसरा आसन हो उसको करें।

वास्तविक आवश्यकता इस बात की है कि पीठ और ग्रीवा दोनों एक ही सीध में रहें; पीठ और ग्रीवा एक सीध में रखना आवश्यक है कि इसके बिना उन आठ चक्रों में ध्यान नहीं लगाया जा सकता, जहाँ मन को स्थिर किए बिना ठीक रीति से जप नहीं होता। नीचे जहाँ रीढ़ की हड्डी समाप्त होती है वहाँ मूलाधार चक्र है और सिर में तालु के ऊपर ब्रह्म–रन्ध्र या ब्रह्म–चक्र। इन दोनों के बीच छः दूसरे चक्र हैं जिनके विषय में आपको पहले सुनाया था। प्रारंभ में ध्यान लगाने के लिए सबसे अच्छा स्थान 'आज्ञा–चक्र' है– दोनों आँखों के बीच वह स्थान जहाँ से नाक प्रारंभ होती है। किन्तु अनेक व्यक्ति आज्ञा–चक्र में ध्यान लगाते हैं तो उनका सिर दुखने लगता है। उन्हें चाहिए कि वे 'आज्ञा–चक्र' के स्थान पर अपने हृदय में ध्यान लगाएँ जहाँ दोनों स्तनों के मध्य गड्ढा–सा है। 'आज्ञा–चक्र' को ध्यान लगाने का सबसे अच्छा स्थान कहा गया है। यह इसलिए कि वहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती की तरह ईड़ा, पिंगला और सुषुम्णा की तीन नाड़ियाँ मिलती हैं। सुषुम्णा रीढ़ की हड्डी से होती हुई नीचे से ऊपर तक आती है। इससे निकल अत्यन्त सूक्ष्म नाड़ियाँ समस्त शरीर में फैली रहती हैं। ईड़ा और पिंगला इसके दाऐं–बाऐं चलती हुई 'आज्ञा–चक्र' में उसके साथ मिल जाती हैं। यह वास्तविक प्रयोग है, जहाँ ज्योति का ध्यान करना चाहिए या फिर **'ओ३म्'** शब्द का। जैसे कोई कागज पर लिखता है, इसी प्रकार ध्यान से इस स्थान पर **'ओ३म्'** लिखो, लिखने के थोड़ी देर बाद वह मिट जाएगा। तब फिर लिखो। बार–बार वह मिट जाएगा। बार–बार लिखो। अन्त में ऐसी अवस्था आएगी कि वह मिटेगा नहीं। जब कभी आँख बन्द करोगे, तभी **'ओ३म्'** दिखाई देगा। यह **'आज्ञा–चक्र'** वह स्थान है; जहाँ आत्म–दर्शन के मार्ग पर जाने का आदेश–पत्र (परमिट) मिलता है। आज्ञा का अर्थ है पासपोर्ट (पारपत्र)। चक्र का अर्थ है कार्यालय। यह पासपोर्ट देने का कार्यालय है, जहाँ **'ओ३म्'** का शब्द धीरे–धीरे ज्योति का रूप धारण करने लगता है। जब यह जाग्रत हो उठे, तब इतना शब्द आनन्द

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

संकल्प शक्ति एवं विचार शक्ति द्वारा आत्मोन्नति

● यश वर्मा

मनु महाराज का एक श्लोक है–

संकल्प मूलः कामो वै, यज्ञः संकल्प सम्भवः।

व्रत नियम धर्माश्च सर्वे संकल्पजः स्मृतः।।

इस श्लोक का अर्थ है कि सब प्रकार की कामनाओं का मूल यह संकल्प है। यज्ञ संकल्प से उत्पन्न होता है। व्रत नियम धर्म सब संकल्प से उत्पन्न हुए माने गए हैं। संकल्प अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी हो सकते हैं, लेकिन वेद के बहुत से मन्त्र हैं जैसे–

ओ३म यज्जाग्रतो.................. शिव संकल्पं अस्तु

ओ३म येन कर्माण्यपसो........... शिव संकल्पं अस्तु

ओ३म येनेदं भूतं भुवन........... शिव संकल्पं अस्तु

ओ३म यत्प्रज्ञानमुत येतो........... शिव संकल्पं अस्तु

ये सभी मन्त्र हमें बताते हैं कि हमारे संकल्प शिव हों अर्थात् कल्याणकारी हों। किसी का अहित करने वाले न हों। संकल्प शक्ति एक बहुत ही अद्भुत एवं दिव्य शक्ति प्रभु ने मनुष्य को ही दी है। इस शक्ति से बहुत से चमत्कार होते हैं। मनुष्य इसी शक्ति से सफल होता है और इसके अभाव में असफल हो जाता है। यही शक्ति मानव की उन्नति अथवा अवनति का कारण बन जाती है।

प्रारबध से मनुष्य जन्म तो मिल जाता है परन्तु संकल्प द्वारा ही क्रियामाण होता है क्योंकि जब किसी कार्य को करने का संकल्प मनुष्य लेता है तो फिर वह उस को पूर्ण करने हेतु अपनी पूरी शक्ति लगा देता है। हम अपने संकल्प विशुद्ध रखें, पवित्र रखें। यदि संकल्प मलिन अथवा अपवित्र होने लगे तो समझ लेना चाहिए कि कोई विपत्ति अथवा कष्ट आने वाला है। संकल्प अथवा विचार को तुरन्त शुद्ध, पवित्र करें। शुद्ध विचार वालों पर यदि कोई विपत्ति आ भी जाए तो लोग सहायता करने को तैयार रहते हैं। दुर्जन व्यक्ति की कोई सहायता नहीं करना चाहता। वृद्धाश्रम, अनाथ आश्रम, गुरुकुल आदि की सहायता इसीलिए तो करते हैं कि वहाँ पर अच्छे विचारों के लोग रहते हैं। अपने मलिन विचारों को प्रारंभ में ही बदल दें। जैसे पौधे को उखाड़ना आसान होता हैं परन्तु यही पौधा यदि पेड़ बन जाए तो इसे उखाड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसी प्रकार मलिन विचारों का पेड़ न बनने दें।

संकल्प शक्ति से बहुत सी विद्याएँ प्राप्त की जा सकती हैं। जैसे मिसमिरेज्म, हिप्नोटिज्म, टैलीपैथी, स्प्रिचुलेज़िम आदि। अध्यात्मवाद का तो आधार ही दृढ़ संकल्प है।

हमारे शास्त्र, हमारे ऋषि/विद्वान और यहाँ तक कि वायरलैस के आविष्कारक मार्कोनी का भी मानना है कि जैसे जल में कंकर फैंकने से तरंगें उत्पन्न होती है वैसे ही शब्द वायुमण्डल में गति उत्पन्न करता है। ऐसे ही ईश्वर की शक्ति आकाश में विद्यमान है। जिस पर संकल्प की तरंगे दूर तक दौड़ती हैं। विचार से उनमें गति होती है। विचार चाहे अनचाहे उठते रहते हैं। अनिच्छित विचार मनुष्य के लिए कईं बार कठिनाइयाँ उत्पन्न कर देते हैं क्योंकि ऐसे विचार के वशीभूत होकर कई बार मनुष्य गलती कर बैठता है। इसलिए अनिच्छित विचार को संकल्प के द्वारा नष्ट कर देना चाहिए। एकदम अपने संकल्प को याद कर लेने से मनुष्य गलत कार्य करने से बच जाता है और सुख पा लेता है।

संकल्प शक्ति से हम जो विचार कहीं भेजेंगे उनके मन तक अवश्य पहुँच जाऐंगे, बहुत से मनों तक पहुँच जायेंगे, जिसके लिए भेजेंगे उनके मन तक अवश्य पहुँच जाऐंगे। कईं बार हम किसी से कोई बात कहते हैं तो वह भी कहता है कि मैं भी आपको ऐसा कहने वाला था। हम किसी को फोन करते हैं तो वह कहता है कि मैं अभी आपको फोन करने वाला था। कईं बार हम किसी को दिल से याद कर रहे होते हैं और वह सचमुच आ ही जाता है। ऐसी सभी बातें संकल्पं शक्ति से ही तरंगित होकर वास्तविकता का रूप ले लेती हैं। पुराने ज़माने में जब फोन नहीं होते थे, दूर बैठे गुरु अपने किसी शिष्य को प्रेरणा देकर इच्छित कार्य करवा लेते थे। यह सब संकल्प शक्ति का ही तो चमत्कार होता है। यदि हम किसी के प्रति प्रेम की तरंगे भेजते हैं तो वह प्रेम लौट कर आता है। यदि घृणा भेजेंगे तो घृणा लौट कर आएगी।

विचारों द्वारा मनुष्य स्वस्थ रह सकता है और विचारों के द्वारा ही रोगी बन जाता है। मानसिक रोगी जितने भी हैं वे विचारों से ही तो रोगी बनते हैं। विचार शक्ति और संकल्प शक्ति द्वारा कई लोग **जीवेम शरदः शतम्** को प्राप्त होते हैं। ऐसे उदाहरण तो कई बार हमारे सामने आते हैं। 80–90 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों से बात करके देखो तो पता चलता है कि उनके जीवन में कईं संकल्प हैं जिनसे उनकी जीवन शैली बँधी हुई है। यही उनके स्वास्थ्य और दीर्घायु होने का रहस्य है।

मनु महाराज कहते हैं कि व्रत, नियम, धर्म सब संकल्प से उत्पन्न हुए माने गए हैं। यज्ञ, दान, सेवा, स्वाध्याय, साधना आदि सभी संकल्प से ही पूर्ण होते हैं। संकल्प से ही व्यक्ति महान, यशस्वी, समृद्धशाली बनता है। बड़े–बड़े जितने भी आविष्कार हुए हैं उनकी सफलता के पीछे एक संकल्प ही तो कार्य करता है। महर्षि दयानन्द जिस समय शिव आराधना कर रहे थे तो एक संकल्प लिया कि मैं सच्चे शिव की खोज करुँगा। लगभग 20 वर्ष लग गए इस संकल्प को पूर्ण करने में। दूसरा संकल्प लिया अपनी दीक्षा के समय कि मैं इस संसार में अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करुँगा। आज जितने भी बड़े–बड़े विद्वान हैं, कथावाचक हैं, मत–पन्थ–सम्प्रदाय हैं, हज़ारों नहीं लाखों की संख्या में शिष्य हैं उनके, लेकिन वे सभी गुरु, कथावाचक, विद्वान, संन्यासी महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को जानते व मानते हैं परन्तु स्वार्थवश कह नहीं पाते। महाराज रणजीत सिंह अटक जीतने चले तो आगे नदी आ गई, लेकिन उनके संकल्प ने उन्हें रुकने नहीं दिया। घोड़ों समेत नदी पार की और अटक को जीत लिया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने असुरों का नाश करके ही दम लिया। श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध में पाँडवों के द्वारा दुर्जनों के ऊपर जीत दिलवाकर पापियों के नाश का संकल्प पूर्ण किया। अपने संकल्प पर डटे रहने वाले व्यक्ति ही महान बन पाते हैं। हठ, दुराग्रह, उच्छृंखलता को विचार शक्ति न समझ लेना चाहिए। शिव संकल्प से संसार का उपकार और गलत संकल्प से संसार का विनाश सम्भव है, यहाँ तक कि विश्वयुद्ध भी हो जाते हैं। मानवता नष्ट प्रायः हो जाती है और शर्मसार भी होती है।

शिव संकल्पों से हम अपने आप को सुखी बना सकते हैं। अपनी आत्मा को उन्नत कर सकते हैं। हम प्रायः शरीर को खुराक देते हैं, परन्तु आत्मा जो शरीर की मालिक है, उसे खुराक देना भूल जाते हैं। हम उस नशेड़ी की तरह हैं जिसके घर मित्र घोड़े पर आता है। नशेड़ी घोड़े को चने खिलाता है, हरी–हरी घास खिलाता है, उसकी मालिश करता है, पानी पिलाता है, परन्तु मित्र को पूछता ही नहीं अथवा हम उस सेठ के बुद्धिहीन नौकर ही तरह हैं जिसे घी का व्यापारी सेठ पुलिस की रेड (छापा) पड़ने पर कहता है कि बाहर ट्रक में 100 क्विंटल घी पड़ा है उसे मिट्टी में दबा दे। नौकर सारा घी डिब्बों से निकाल कर मिट्टी में दबा देता है और खाली डिब्बे पुनः ट्रक में रख देता है। हम भी इसी प्रकार आत्मा रुपी घी को तो मिट्टी में डाल रहे है। डिब्बा रुपी शरीर को सब प्रकार से सजाते संवारते रहते हैं। आत्मा मलीन होती जा रही है। हमें अपनी आत्मा को उन्नत करना है तो जो दुःख के पाँच कारण हैं जैसा कि योगदर्शन के साधनापाद के सूत्र में लिखा है कि

"अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाःक्लेशाः।।"

अर्थात अविद्या यानि नित्य को अनित्य और अनित्य को नित्य समझना, आत्मा को अनात्मा और अनात्मा को आत्मा, शुचि को अशुचि और अशुचि को शुचि तथा सुख में दुःख व दुःख में सुख समझना, अस्मिता यानि आत्मा और शरीर को एक समझना, राग, द्वेष और अभिनिवेश यानि मृत्यु का भय, इन पाँचों कारणों पर मनन, चिंतन, मंथन विचार करना होगा। मंथन के पश्चात् इन्हें दूर करने के साधन योगदर्शन के साधना पाद के सूत्र 32 के अनुसार क्रियान्वन करना होगा। यह सूत्र है–

"शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः"

तप का अभिप्राय है हर हाल में सहनशील हो जाना, स्वाध्याय अर्थात् अपने आप को जान लेना अभ्यास के द्वारा, ईश्वरप्रणिधान अर्थात् जो किया सब प्रभु को अर्पण कर देना। इन साधनों को अपनाने से हमारी आत्मा उन्नत होगी। हम ईश्वर की आज्ञानुसार कर्म करें। प्रभु की आज्ञा है कि किसी को दुःख न दो, न मन से, न वाणी से न शरीर से। इसी एक वाक्य में संसार के प्रत्येक वाणी के सुख का रहस्य छिपा हुआ है।

निरन्तर प्रभु के ध्यान से, दृढ़ संकल्प शक्ति एवं विचार शक्ति के द्वारा हम अपनी आत्मा की उन्नति कर सकते हैं।

ओ३म् के ही ध्यान से और ध्यान से ही योग तक,

जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक यह ओ३म् ही पहुँचाएगा।

मंत्री, आर्य समाज

मॉडल टाउन, यमुनानगर

मनु–स्मृति का महत्व

● **महात्मा चैतन्यमुनि**

महर्षि मनु हमारे इतिहास के ऐसे महानायक हैं जिन्होंने मानव जीवन की महत्ता को प्रकट करते हुए हमारे लिए ऐसे मूल्यवान सूत्र दिए जिन पर चलकर हम अपनी चतुर्दिक उन्नति करते हुए समाज और देश की उन्नति की दिशा में भी विधिवत् अग्रसर हो सकते हैं। उन्होंने धर्म की सही–सही व्याख्या करते हुए उसे व्यक्ति की व्यावहारिकता के साथ जोड़ने का भी स्तुत्य प्रयास किया है। इसलिए मनुमहाराज को संसार के समस्त बुद्धिजीवियों ने न केवल सराहा है बल्कि उनके द्वारा दिए गए सूत्रों को मानव मूल्यों की स्थापना के लिए अत्यधिक उपयोगी तथा महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय माना है। इसे मानव जाति का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि कुछ लोगों ने अपनी अल्पज्ञता के कारण मनु महाराज द्वारा प्रस्तुत सामाजिक एवं आध्यात्मिक नियमों और व्यवस्थाओं को गहराई से न समझकर उनका विरोध करना आरंभ कर दिया है। आजकल बहुत ही उपहासात्मक तथा व्यंग्यात्मक शब्दों में 'मनुवाद' शब्द का प्रयोग कुछ लोगों द्वारा किया जाता है तथा अपने राजनैतिक या अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मनु के बारे में उनके प्रकार की भ्रान्तियाँ फैलाकर व्यक्ति–व्यक्ति में विद्वेष की भावना पैदा करने का षड़यन्त्र रचा जा रहा है। पाठकों की जानकारी के लिए हम मनुवाद शब्द का अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि वे इस तथ्य से परिचित हो सकें कि क्या यह शब्द वास्तव में ही इतना हेय और त्याज्य है? मनुवादी व्यवस्था का अर्थ है–'गुण–कर्म–योग्यता के श्रेष्ठ मूल्यों के महत्व पर आधारित विचारधारा के अनुरूप व्यवस्था' और गैरमनुवादी व्यवस्था का अर्थ है–'अगुण–अकर्म–अयोग्यता के अश्रेष्ठ मूल्यों पर आधारित व्यवस्था।' अब यह बात अत्यधिक चिन्तनीय हो जाती है कि मनु का विरोध करने वाले आखिर समाज को कहाँ ले जाना चाहते हैं? जिन लोगों ने भी मनु का विरोध किया या किया जा रहा है उसका कारण मनु या उनके द्वारा प्रणीत मनुस्मृति नहीं है बल्कि अपने–अपने पूर्वाग्रहों, मनु के आदेशों के गलत ढंग से कार्यन्वयन तथा अपनी अलग पहचान बनाए रखने की स्तही भूख ही मनु जी के विरोध का मुख्य कारण रहा है। इन्हीं कारणों से कुछ लोगों ने न केवल उनके बारे में अपशब्दों का प्रयोग किया बल्कि मनुस्मृति जैसे अद्वितीय ग्रन्थ को जलाने और मनु महाराज की प्रतिमा तक हटवाने के कुप्रयास भी किए हैं। हालांकि इन कृत्यों से न तो मनु जी की प्रतिभा पर ही कोई आँच आती है और न ही मनुस्मृति का महत्व घटता है। मनु जी की प्रतिमा को हटाने के कुप्रयास पर तो न्यायालय द्वारा भी रोक लगा दी गई है। मनु की श्रेष्ठता और उनकी मूल भावना को न समझ सकने के कारण ही उनके बारे में लोगों के मन में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ फैलाने का षड़यन्त्र समय–समय पर किया जाता रहा है।

जो लोग मनु के दर्शन की गहराई तथा वास्तविक स्वरूप को समझ सकने की सामर्थ्य रखते हैं उनके द्वारा मनु महाराज को मानव मूल्यों तथा सामाजिक समरसता और श्रेष्ठता के सूत्र देने वाले प्रथम प्रवक्ता के रूप में आदर दिया जाता है। इनके विचारों की उपयोगिता व श्रेष्ठता के बारे में यहाँ तक कहा गया है–**'मनुर्वै यत्किंचावदत् तद् भैषजम्' (तै.सहिंता)** अर्थात् मनु ने जो कुछ कहा है, वह मानवों के लिए भेषज–औषध के समान कल्याणकारी एवं गुणकारी है। हम देखते हैं कि संहिता ग्रन्थों, ब्राह्मणग्रन्थों, वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत आदि ग्रन्थों ने मनु को प्रमाण माना है। आचार्य बृहस्पति जी ने तो यहाँ तक कहा है कि वेदार्थों के अनुसार रचित होने के कारण सब स्मृतियों में मनुस्मृति ही सबसे प्रधान एवं प्रशंसनीय है...मनुस्मृति के समक्ष सभी शास्त्र निस्तेज व प्रभावहीन विद्वानों की आज्ञा से सिद्ध कार्य–इन चारों का हेतुशास्त्र का आश्रय लेकर कुतर्क आदि द्वारा खण्डन नहीं करना चाहिए। इसीलिए ऐसे कुतर्की को मनुमहाराज भी निन्दा करने योग्य नास्तिक और श्रेष्ठजनों द्वारा बहिष्कृत करने योग्य कहते हैं। उनका कथन है कि श्रुति और स्मृति ग्रन्थों की किसी भी अवस्था में आलोचना नहीं करनी चाहिए क्योंकि उन्हीं से धर्म की उत्पति हुई है। जो व्यक्ति कुतर्क आदि का सहारा लेकर उनकी अवमानना व निन्दा करता है, श्रेष्ठ लोगों को चाहिए कि उसे समाज से बहिष्कृत कर दें, क्योंकि वेद की निन्दा करने वाला ऐसा व्यक्ति नास्तिक है। महाकवि अश्वघोष, याज्ञवल्क्य, शंकराचार्य, शबरस्वामी, गौतम, वशिष्ठ, आपस्तम्ब, आश्लायन, जैमिनि, बोधायन तथा आचार्य चाणक्य आदि महापुरुषों ने मनुस्मृति की श्रेष्ठता को एक स्वर से स्वीकार किया है। आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती सहित समस्त आचार्यों तथा दार्शनिकों ने मनुस्मृति को धर्म का आधार माना है।

अपनी गुणवता के आधार पर मनुस्मृति का विदेश में भी पर्याप्त स्वागत हुआ है। इस सम्बन्ध में डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी लिखते हैं कि ब्रिटेन, अमेरिका तथा जर्मन से प्रकाशित 'इन्साइक्लोपीडिया' में मनु को मानव जाति का आदि पुरुष, आदि धर्मशास्त्रकार, आदि विधिप्रणेता, आदि न्यायशास्त्री और आदि समाज व्यवस्थापक के रूप में वर्णित किया गया है। मैक्समूलर, ए.बी.कीथ, लुईसरेना, पी.थामस तथा मैक्डानल आदि पाश्चात्य लेखकों ने मनुस्मृति को धर्मशास्त्र के साथ–साथ 'लॉ–बुक' मानते हुए उसमें नीहित विधान को सार्वभौमिक, सार्वजनीन और सबके लिए कल्याणकारी माना है। भारतीय सुप्रीमकोर्ट के तत्कालीन जज सर विलियम जोन्स ने तो भारतीय विवादों के निर्णय में मनुस्मृति की अपरिहार्यता को देखते हुए संस्कृत सीखी और मनुस्मृति को पढ़कर उसका सम्पादन किया। जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्से ने तो यहाँ तक कहा है कि –'मनुस्मृति बाईबल से उत्तम ग्रन्थ है बल्कि उससे बाईबल की तुलना करना ही पाप है।' अमेरिका से प्रकाशित 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइंसिज', 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' कीथ रचित 'हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिट्रेचर', भारतरत्न पी.वी.काणे रचित 'धर्मशास्त्र का इतिहास', डॉ. सत्यकेतु रचित 'दक्षिण–पूर्वी और दक्षिण एशिया में भारतीय संस्कृति' आदि पुस्तकों में विदेशों में मनुस्मृति के प्रभाव और प्रसार का जो विवरण दिया गया है, उसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय अपने अतीत पर गर्व कर सकता है। बालि द्वीप, बर्मा, फिलीपीन, थाईलैण्ड, चम्पा (दक्षिण वियतनाम), कम्बोडिया, इन्डोनेशिया, मलेशिया, श्रीलंका तथा नेपाल आदि देशों से प्राप्त शिलालेखों और उनके प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि वहाँ प्रमुखतःमनु के धर्मशास्त्र पर आधारित–कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था रही है। मनु के विधानों को सर्वोच्च महत्व दिया जाता था और उन्हीं के अनुसार न्याय होता था।

देश–विदेश में मनु. जी की मान्यताओं को इतने आदर और सत्कार के साथ माना जाता है मगर इसके बावजूद भी कुछ लोग मनु जी का घोर विरोध क्यों करते हैं इस पर थोड़ा सा चिन्तन करना जरूरी है। भारतवर्ष की संस्कृति को हेय और त्याज्य सिद्ध करने का षड़यन्त्र सबसे अधिक अंग्रेजी राज में हुआ है। उन्होंने बड़ी ही चतुरता के साथ भारतीय संस्कृति की उत्कृष्टता को नीचा दिखाने तथा फूट डालो और राज करो की नीति को कार्यरूप देने के लिए वेद व स्मृतियों आदि में आपत्तिजनक बातें होने की चर्चा प्रमुखता से की और जाति–पाति व साम्प्रदायवाद की भावना को भारतीयों के हृदयों में गहराई के साथ बैठाने का प्रयास किया। ऐसा उन्हें इसलिए करना अपेक्षित था ताकि भारतीयों को अपनी संस्कृति व महापुरुषों के प्रति घृणा के भाव पैदा हो जाएँ तथा हम उन्हें ईसाईयत की ओर आकर्षित कर सकें। दूसरे उन्हें भारतवासियों की आपसी एकता की भावना में सेन्ध लगाने का काम करना था। अन्ततः इसका मुख्य लक्ष्य अपनी सत्ता को चिरस्थाई बनाना ही था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे ऋषिकोटि के महापुरुष तो अंग्रेजों के इस षड़यन्त्र को बहुत पहले ही गहराई से पहचान गए थे तथा इसके निराकरण में मन–वचन–कर्म से जुट भी गए थे मगर कुछ लोग अंग्रेजों की इस चाल को नहीं समझ सके और उन्हें अपनी संस्कृति व लोग ऐसे ही दिखाई देने लगे जैसा अंग्रेजों ने अपने हाथ में लिए शीशे में उन्हें दिखाया। स्वतन्त्रता के बाद भी कुछ लोगों की मानसिकता वैसी ही रही और ऐसे लोगों ने अपने राजनैतिक व सामाजिक लाभ उठाने के लिए मनुवादी और गैरमनुवादी नाम से भारतीयों को बाँटनें का प्रयास किया। अब क्योंकि उन्हें अपनी इस कुत्सित भावना को एक विशाल फलक व आधार देना था इसलिए वेद व मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में दोष निकाले जाने का प्रयास किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुस्मृति का विरोध पूर्वाग्रहों, राजनैतिक व अन्य सामाजिक स्वार्थों तथा मनु की मूल भावना को न समझने के कारण हुआ है। इसके साथ ही विरोध करने वालों ने मनुस्मृति का स्वयं गहन अध्ययन नहीं किया बल्कि उसे मात्र सतही तौर पर ही देखा या लोगों से सुनी–सुनाई बातों पर ही विश्वास कर लिया।

कुछ लोगों ने शूद्रों आदि के प्रति समसामयिक विषमताओं को देखकर तथा इसका दोष मनुस्मृति पर मढ़कर घोर प्रतिक्रियावादी बनकर मनुस्मृति का विरोध किया है। श्री फुले जी अपनी पुस्तक 'गुलामगिरि' में ब्राह्मणोंऽस्यमुखमासीत् पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि ब्राह्मण को मुख से जन्म देने वाला ब्रम्हा का मुख ऋतु (आर्तव) काल में चार दिन अलग–अलग बैठता था या भस्म लगाकर घर के कामकाज करता था, इस विषय में मनु ने कुछ लिखा है या नहीं। ब्राह्मण को यदि व्यक्ति का मुख (श्रेष्ठ) होने की उपमा दे दी तो इतनी सी बात तो फुले जी को समझनी ही चाहिए थी कि मुँह से किसी व्यक्ति का जन्म नहीं होता है, यह तो ग्रन्थकार ने ब्राह्मण की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए उपमा दी है। श्री अम्बेडकर जी मनु जी द्वारा विवेचित ब्राह्मण और शूद्र की परिभाषा की गहनता व गुणवत्ता को न समझने के कारण ही इस प्रकार की अजीब बात कहते हैं कि–'ब्राह्मण को शूद्र के स्थान पर बैठाया जाएगा, तभी मनुप्रणीत निर्लज्ज तथा विकृत मानवधर्म का निवारण हो सकता है।' यदि अम्बेडकर जी ब्राह्मण और शूद्र का सही भाव समझते

शेष पृष्ठ 09 पर

संस्कार क्यों?

● पं. रामदेव शर्मा

अति प्राचीन काल में ऋषियों ने मनुष्यों को सुसंस्कृत बनाने हेतु बहु विधि संस्कारों की योजना की ऋषिकृत गृह्य सूत्रों में गर्भाधान से मृत्यु पर्यन्त संस्कारों की श्रृंखला का वर्णन मिलता है और प्रत्येक संस्कारों की क्रिया में वैज्ञानिक व आध्यात्मिक पुट दृष्टि गोचर होता है। संस्कारों की अधिक से अधिक अड़तालीस और न्यून से न्यून दस संख्या मिलती है किंतु दयानिधे ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति व ग्रह्यसूत्रों के आधार पर अति उपयोगी सोलह संस्कारों को ही मान्यता प्रदान की है, इस हेतु संस्कार विधि नामक ग्रन्थ की रचना कर मानव मात्र पर बड़ा उपकार किया है। अब स्थिति यह है कि किसी भी पौराणिक विद्वान् से पूछे कि संस्कार कितने हैं तो वह तुरंत सोलह संस्कार बताता है।

ऋषि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है किंतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और संस्कार विधि ये तीनों ग्रंथ अनुपम है। इसलिए इनकी गणना वृहत्रयी ग्रन्थों में आती है।

सम्भवतः ऋषिवर को सत्यार्थ प्रकाश के लेखन काल में ही संस्कार विषयक ग्रन्थ लिखने का विचार हुआ होगा, चूँकि सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुल्लास में ही लिखा है ''माता–पिता को अति उचित है कि गर्भाधान से पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, दुर्गन्ध, रुक्ष, बुद्धि नाशक पदार्थों का सेवन छोड़ जो शान्ति, आरोग्य, बलबुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करे जैसे धृत, दुग्ध, मिष्ठान्न आदि पदार्थों का सेवन करे जिससे रज, वीर्य दोष से रहित होकर अत्युत्तम गुण युक्त संतान हों।

बालक के शरीर निर्माण पर माता–पिता के कुल, आहार–विहार, आचार–विचार व जलवायु का प्रभाव पड़ता है। कुछ देशों में जो बच्चे अगस्त से अक्टूबर तक पैदा होते हुए, विकृत बुद्धि वाले, हीन अंग वाले तथा अल्पायु वाले पैदा हुए। परीक्षण से ये तथ्य सामने आये कि उन देशों में नवम्बर से जनवरी के अत्यधिक शीत बढ़ने पर शराब, मांस आदि के सेवन से गर्भस्थ शिशुओं पर कुप्रभाव पड़ा। जलवायु और वातावरण के बारे में भी नागासाकी, हिरोशिमा व भोपाल गैस काण्ड के बाद जो बच्चे पैदा हुए अधिकांश विकलांग या मन्दबुद्धि वाले हुए।

ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत आदि स्वतः प्रमाणित करते हैं कि माता–पिता के आहार–विहार, आचार–विचार का गर्भस्थ शिशु पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, बालक गर्भकाल से ही संस्कार प्राप्त करता हुआ जन्म लेता है। बालक के पूर्व जन्मस्थ, शुभा–शुभ कर्म साथ ही आते हैं। इसलिए उत्तम संस्कारों से अलंकृत करने वाले माता–पिता व आचार्य मिल जाए तो वे बालक बड़े भाग्यशाली होते हैं। अतः उत्तम संस्कारों के विषय में स्मृति दिलाते है।

महाबली व धार्मिक अश्वथ्थामा को माँ ने संस्कार दिए। तेरे आगे वेद और पीछे धनुषबाण है। अतः वह धार्मिक व पराक्रमी हुआ।

वीर योद्धा अभिमन्यु के बारे में गर्भस्थ संस्कार का सबको विदित है। माता मदालसा ने अपने तीन पुत्रों को संस्कार से सन्यासी तथा चौथे पुत्र अलर्क को महान सम्राट बनाया।

नेपोलियन बोनापार्ट की माँ पराक्रमी व गर्भवती थी सेना की परेड़ देखा करती थी–वीर सैनिक बना।

ब्रिटेन का प्रिंस विस्मार्क जब गर्भ में था तो उसकी माँ अपने किले के ध्वंश अवशेषों को देखा करती थी तो प्रिंस द्वितीय विश्व युद्ध में फ्रांस का दुश्मन (वैरी) ही रहा।

वीर बालक लव–कुश, हनुमान, शिवाजी, श्रवण कुमार आदि के माता–पिता या आचार्य के द्वारा दिए संस्कार ही तो थे जो ऐतिहासिक प्रेरणादायी बने।

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समु. में ऋषिवर लिखते हैं कि वह सन्तान बड़ा भाग्यवान है जिसके माता–पिता धार्मिक व आचार्य विद्वान् हैं अतः उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हुआ कि मनुष्य को सुसंस्कृत करने हेतु ही दयानिधान दयानन्द ने संस्कार विधि नामक ग्रन्थ की रचना की।

1. महर्षि संस्कार विधि की भूमिका में लिखते हैं ''शरीर और आत्मा के सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यंत योग्य होते हैं इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

2. जिस वस्तु या आत्मा को संस्कारों द्वारा शुद्ध किया जा कर वह पवित्र है इससे भिन्न संस्कार युक्त नहीं वह अपवित्र। जिस प्रकार विचारशील मनुष्य औषधियों को शुद्ध कर सुख की वृद्धि के लिए निर्माण करते हैं इसी प्रकार शरीर आत्मा को शुद्ध करना चाहिए।

3. किसी भी पदार्थ के दोषों को निवृत्त कर यथेष्ट प्रयोग में लाने के लिए परिष्कृत करने का नाम संस्कार है।

4. स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश में महर्षि लिखते हैं–संस्कार उसको कहते हैं जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवें।

आत्मा जन्म जन्मान्तरों के शुभा–शुभ कर्मो का वाहक होता है। अतः पूर्व जन्मों में किए गए शुभाशुभ कर्मो के प्रभाव को अभिभूत कर शुभ–संस्कारों से परिष्कृत कर मनुष्यों को उन्नति मार्ग पर अग्रेषित करने के लिये संस्कार अति आवश्यक हैं क्योंकि बालक पवित्र वातावरण पाकर उन्नतिशील, अध्ययनशील, स्वाध्यायशील व सदाचारी बनकर गृहस्थ को सुखी करते हुए समाज व राष्ट्रोत्थान में सहयोगी होता है। अन्यथा संस्कार विहीन व्यक्ति निन्दा का पात्र होता ही है समाज व राष्ट्र के लिए भी घातक होता है। संस्कार विहीन नेताओं के अंशमात्र वाक्य देखिए। ''निठारी जैसे वीभत्स कांड, जिसने मानवता को झकझोर कर रख दिया। तत्कालीन सत्तारूढ़ पार्टी के नेता बड़ी बेशर्मी से कहते हैं कि छोटे–मोटे काण्ड तो होते ही रहते हैं। बलात्कार जैसे जघन्य अमानुषिक अपराधों पर बड़ी लज्जाजनक बाते कहते हैं। ''जवान लड़के हैं, गलती हो जाती है, फाँसी पर थोड़े ही चढ़ाना चाहिए। जब बिहार में बाढ़ आयी सरकारी सहायता नहीं पहुँची जब पत्रकारों, टी.वी. एंकरों ने कहा मुख्यमंत्री जी बाढ़ पीड़ितों को सहायता नहीं पहुँच रही है, आप कुछ करिए, लोग भूख के मारे चूहे मार–मार कर खा रहे हैं। तब तत्कालीन मुख्यमंत्री (नितीश जी से पूर्व) कहते हैं कौनों बात नाही मैं बहुत पहले से चूहे खा रहा हूँ। तो थोड़ी सी संस्कार विहीनों की वानगी है। देश का दुर्भाग्य है। कि देश के स्वतंत्र होते ही देश संस्कार विहीन नेताओं के हाथ में चला गया। कारण जिन देश भक्तों के बलिदान, त्याग, तपस्या से देश स्वतंत्र हुआ उनमें से अधिकांश ने बलिवेदी पर आहुति दे दी और जो बच गए वे अंग्रेजों की अमानुषिक यातनाओं से अशक्त हो गए और उनमें से जो बच गए उन्होंने त्याग पूर्वक कहा हमारा संकल्प देश आजाद कराने का था सत्ता का नहीं। संस्कार विहीन सत्ता लोलुपी स्वार्थी सत्ता पर काबिज हो गए। इसका फल जनता भोग रही है।

हरिद्वार गुजरावाला मोहल्ले में महामना श्री प्रकाश वीर शास्त्री के अथक प्रयासों से आर्यसमाज का भवन बन कर जब तैयार हुआ उसके उद्घाटन हेतु प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया वे आए यजमान बने यज्ञ पर बैठे कार्यक्रम के पश्चात् पत्रकारों ने यज्ञ के बारे में पूछा तो कहने लगे कि ये आर्य समाजी है, लोगों को खाने के लिए नहीं ये व्यर्थ में जला रहे हैं। यदि भारतीय संस्कृति के थोड़े भी संस्कार होते या वायुमण्डल का वैज्ञानिक ज्ञान होता तो ऐसी बात कभी नहीं कहते। मि. ह्यूम द्वारा स्थापित भारतीय कांग्रेस प्रारंभ से ही भारतीय संस्कार और संस्कृति को छिन्न–भिन्न करने में लगी रही। राजीव से सोनिया (मनमोहन) के शासन काल में तो हद हो गयी। पहले गणित के अंक निकाले उनकी जगह आंग्ल भाषा के अंक स्थापित किए फिर धीरे–धीरे संस्कृत भाषा को ही मृतभाषा का प्रचार कर पाठ्य पुस्तकों से निकाला। जरा विचार कीजिए वेद, उपनिषद्, ग्रह्य सूत्र, उपवेद, ब्राह्मण ग्रंथ आयुर्वेद ग्रथ ऐतिहासिक रामायण, महाभारत, गीता आदि अनेक ग्रंथ संस्कृत भाषा से ही हैं। बड़ा गहरा कुचक्र चलाया जब भाषा ही समाप्त हो जाएगी तो भारत की संस्कृति–सभ्यता स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। अभी 20.04.2017 को गौवध के विषय में श्री पंवार जी अपने सुन्दर मुखारबिन्द से दूरदर्शन पर कहते हैं ''कि वीर सावरकर कहा करते थे कि जब तक गाय की उपयुक्तता है तब तक ठीक, जब उपयुक्तता समाप्त हो जाए तो वध करने में कोई दोष नहीं। प्रथम तो मार्गरेट कांग्रेसियों के मुख से वीर क्रांतिकारियों का नाम लेना शोभा नहीं देता। (चूकि उनके जीवित रहते हमेशा विरोध करते रहे।) दूसरे क्या बूढ़े नेता या मनुष्य की उपयुक्तता समाप्त हो जाए तो उसका वध कर देना चाहिए? जरा पढ़ो ऋषि दयानन्द को जो गाय के बारे में लिखते हैं गाय सूख तृण और घास खाकर अमृत तुल्य पय प्रदान करती है, और उसके बाद भी औषध युक्त मूत्र से रोगाणुओं को दूर करती है, गोबर से उत्तम खाद बनता है। जिससे अच्छी फसल पैदा होती है, कृषक उन्नत होता है और ये बूढ़े नेता वातावरण को दूषित करने के अलावा किसी काम के नहीं। उपयुक्तता समाप्त तो क्या करें?

वीर सावरकर के ये वाक्य याद क्यों नहीं आए ''गौ की रक्षा भारत में राष्ट्रीय कर्तव्य है।''

अप्रैल माह में कन्हैया नामक व्यक्ति दूरदर्शन पर कह रहा था कि देश की दिशा आर.एस.एस. (राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ) तय नहीं करेगा। इस देश द्रोही को, हिजबुल, लश्कर तैयबा, नक्सली, सिमी, हिजब, आई. एस. हुरियत आदि नहीं दिखते। अरे दुर्जन 1962 के युद्ध में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु ने नगरों, ग्रामों, राष्ट्रीय सम्पदा की रक्षा हेतु सहयोग मांगा था और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने बड़ी मुस्तैदी से नगरों, गाँवों की रक्षा हेतु ब्लेक आउट में पहरा दिया, माल की रक्षा की, इसके ठीक विपरीत कम्युनिष्टों ने चीन का साथ दिया था तथा गुजरात के पोरबंदर में जब बाढ़ आई तो वहाँ पर जब स्वयं इन्द्रागांधी गई थी। संघ वाले सेवा करते हुए दिखे। मंच से उन्होंने कहा यहाँ तो निकरधारी पीड़ितो की सेवा करते हुए दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेसी सेवा दल कहाँ है? और निकरधारियों की प्रशंसा की। कहा कि भारत में आपदा के समय कोई भेदभाव नहीं रह जाता। अभी मई माह के प्रारंभ के दिनों में तेलंगाना में पुलिस ने कुछ देशद्रोही व अराजक तत्वों की धरपकड़ की तो दिग्विजय सिंह का बयान आया कि तेलंगाना पुलिस मुस्लिम युवाओं को परेशान कर रही है। अरे ओ मैकाले के मानस पुत्रों! तुम्हें तेलंगाने के पुलिस जवान तो दिख रहे हैं कश्मीर में पत्थर बाज मुसलमान युवक नहीं दिख रहे, हाय! ये कैसा दुर्भाग्य कि सन् 1947 से ही चापलूस, सत्तालोलुपी, संस्कार विहीन सत्ता पर काबिज रहे और अतितुष्टिकरण व अपसंस्कृति का जो बीज रोपा वह अब काँटेदार वृक्ष बन कर राष्ट्रीय लोगों को कष्ट दे रहा है।

उच्चतम न्यायालय के उन न्यायाधीशों को नमन करते हुए कोटिशः धन्यवाद करते हैं कि निर्भया काण्ड के नरपिशाचों को मृत्यु दण्ड दिया और न्याय प्रक्रिया का अच्छा सन्देश गया। नाबालिग की आड़ में जो दुष्ट बच गया, उसका दुःख है। दुष्कर्मी का उम्र से कोई संबन्ध नहीं होना चाहिए अपराध करने वाला केवल अपराधी है।

आर्य समाज,
मीममण्डी, कोटा ज.
मो. 9460676545

अमैथुनी सृष्टि का वैज्ञानिक आधार

● ओमप्रकाश आर्य

परमात्मा की बनाई सृष्टि विचित्रताओं से परिपूर्ण है। मानव के मन में यह सदैव जिज्ञासा रही है कि इस धरती पर जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हुई? कुछ लोग विकासवाद का समर्थन करते हैं तो कुछ लोग कल्पित विचारों को मानते हैं किन्तु वैदिक विचारधारा इन सबसे पृथक है। चूँकि वेद परमात्मा का अमर नित्य ज्ञान है इसलिए उसमें वर्णित अमैथुनी सृष्टि पूर्णतया विज्ञान सम्मत है। उसमें विकासवाद और मिथ्या कल्पना को कोई स्थान नहीं है। पहले मुर्गी आई या अण्डा– इसका समाधान अमैथुनी सृष्टि से स्वतः हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के अष्टमसमुल्लास में अमैथुनी सृष्टि का उल्लेख करते हुए लिखते हैं– "आदि सृष्टि में मनुष्य आदि की सृष्टि युवावस्था में हुई थी क्योंकि जो बालक उत्पन्न करता तो उनके पालन के लिए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और वृद्धावस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टि न होती। इसलिए युवावस्था में सृष्टि की है।" वे आगे लिखते हैं– "सृष्टि के आदि में अनेक मनुष्य उत्पन्न किए थे, क्योंकि जिन जीवों के कर्म ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न होने के थे उनका जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता है, क्योंकि **'मनुष्या ऋषयश्च ये। ततो मनुष्या अजायन्त।"** आदि में अनेक अर्थात् सैंकड़ों सहस्रों मनुष्य उत्पन्न हुए और सृष्टि में देखने से भी निश्चित होता है कि मनुष्य अनेक माँ–बाप की सन्तान है।"

महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त कथन से निम्न बातें प्रकट हो रही हैं–

1. आदि सृष्टि में मनुष्य, जीव–जन्तु सबकी उत्पत्ति युवावस्था में होती है।
2. आदि सृष्टि में अनेक मनुष्य उत्पन्न होते हैं।
3. आदि सृष्टि को ऐश्वरी सृष्टि कहते हैं।
4. ऐश्वरी सृष्टि में उत्तम कर्म वाले मनुष्यों की उत्पत्ति होती है।
5. ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न उत्तम मनुष्य ऋषि संज्ञा से अभिहित होते हैं।

अमैथुनी सृष्टि का वर्णन हमें वेद के निम्न मंत्रों में मिलता है–

उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुवयचसं पृथिवीं सुशेवाम्।
उर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात्।।

ऋ. 10/18/10

पदार्थ– "हे जीव (सुशेवाम्) उत्तम सुखवाली (पृथिवीम्) विस्तीर्ण (उरु व्यचसम्) बहुत प्रस्तार वाली (एताम्) इस (मातरम्) माता (भूमिम्) भूमि को (उप सर्प) प्राप्त हो, (उर्ण म्रदा) सुकुमार मृदु (दक्षिणावते) दक्ष जीवों के लिए (युवतिः) युवती के समान (एषा) यह (त्वा) तुझे (निर्ऋतेः) क्लेश के (उपस्थाद्) स्थान से (पातु) सुरक्षित रखें।"

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा नि बाधथा सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि।।

ऋ. 10/18/11

पदार्थ– "(पृथिवि) यह भूमि (उत्) श्वञ्चस्व) उफनी हुई होती है, (मा) नहीं (नि वाधथाः) पीड़ित करती है (अस्मै) इस जीव के लिए सूपायना) उत्तम पारचारिका तथा (सूपवञ्चना) सुस्थिर (भव) होती है। (माता यथा) माता के समान (पुत्रम्) को (सिचा) अपने आच्छादन से (भूमे) यह भूमि (अभि उर्णुहि) आच्छादित करती है।

उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र।।

ऋ. 10/18/12

पदार्थ– "(पृथिवी) भूमि (उच्छ्वञ्चमाना) उफनी (सुतिष्ठतु) सुष्ठु रूप से स्थिर रहे (सहस्रम्) सहस्रो (मितः) परिगणित पार्थिव परमाणु (हि) निश्चय से (उप श्रयन्ताम्) इसमें संयुक्त रहे (ते) वे परमाणु (घृतश्चुतः) घृत की तरह चिकने हुए (अस्मै) इस जीव के लिए (विश्वाहा) सदा (शरणाः) आश्रय (सन्तु) होवें।"

उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवंती चराये।
अभुदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि।।

ऋ. 7/77/1

पदार्थः– " (तमांसि) अज्ञानरूप तम को (वाधमाना) नाश करती हुई (अग्निः ज्योति) प्रकाशस्वरूप ज्योति (मानुषाणां, समिधे, अकः) मनुष्यों के सम्बन्ध में प्रकट हुई, जिसने (प्रसुवंती) प्रसूतावस्था में (विश्वं, चरायै, जीवं) विश्व के चराचर जीवों को (अभूत्) प्रकट किया, वह ज्योति (उपो) इस संसार में (युवतिः) युवावस्था वाली (रुरुचे) प्रकाशित हुई (न योषा) स्त्री के समान नहीं।"

धरती को माता कहा जाता है। माता जन्म देने का काम करती है। ऐश्वरी सृष्टि में धरती माता का काम करती है। जिस प्रकार एक परिचारिका सेवा का काम करती है उसी प्रकार आदि सृष्टि में धरती मनुष्य को युवावस्था तक अपने गर्भ में पालन करती है। प्रश्न यह उठता है कि बिना नर–नारी के संयोग के सृष्टि–रचना कैसे संभव है? वास्तव में मूल तत्त्व कभी नष्ट नहीं होता है। रज और वीर्य मूल तत्त्व के रूप में मौजूद रहते हैं। उन मूल तत्त्वों को शुक्राणु एवं डिम्बाणु के अणु कह सकते हैं।

शुक्राणु बनाने के परमाणु होते हैं। उसी प्रकार डिम्बाणु बनाने के परमाणु होते हैं। प्रत्येक पदार्थ के अणु तथा परमाणु अलग–अलग प्रकृति के होते हैं इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन व प्रोटोन की संख्या के आधार पर। उनके अणु वायु में विद्यमान रहते हैं। जीव की उत्पत्ति के लिए फूल बनते समय वे फूल के अन्दर चले जाते हैं। फूल से फल में अनुकूल परिस्थिति, वायु और नमी मिलने पर शुक्राणु और डिम्बाणु परस्पर मिलकर कीट का निर्माण करते हैं, आत्मा बाद में प्रविष्ट होती है। जैसे हम देखते हैं कि मटर व चने के दाने में कीट अन्दर ही पैदा होते हैं। वे बाहर से प्रवेश नहीं करते। बाहर आने पर उनकी संख्या में वृद्धि होती है। इन कीटों की उत्पत्ति उन मूल तत्त्वों की विद्यमानता से ही संभव हुई जो फूल के माध्यम से बीज में आए और अनुकूल परिस्थितियों में उनकी उत्पत्ति हुई।

कुछ इसी प्रकार की प्रक्रिया अमैथुनी सृष्टि में भी होती है। रज–वीर्य के मूल तत्त्व परमाणु ईश्वरीय व्यवस्थानुसार प्रकृति के सम्पर्क में प्राकृतिक ढंग से किसी विशिष्ट खोल में एकत्र होकर जीव उत्पत्ति का कारण बनते हैं। वह विशिष्ट खोल भी ऐसा होता होगा जैसे माता का गर्भ, जिसमें जीव समस्त रसों को धरती से ग्रहण करते हुए युवावस्था पर्यन्त उसमें पालित–पोषित होता है। उचित समय आने पर युवाकाल में स्त्री–पुरुष के जोड़े उस विशिष्ट खोल से बाहर आते हैं। तत्पश्चात् उनसे मैथुनी सृष्टि की प्रक्रिया चलनी शुरु हो जाती है।

चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों के प्रलयान्तर के पश्चात् सृष्टि की उत्पत्ति प्रारंभ होती है। जब सृष्टि जीवों के रहने के योग्य हो जाती है तब उनकी प्रथम उत्पत्ति अमैथुनी सृष्टि के रूप में होती है। इतने काल तक समस्त जीव मूर्च्छित–सी अवस्था में सुप्त पड़े रहते हैं। चूँकि प्रलयावस्था में समस्त अणु–परमाणु पृथक हो जाते हैं इसलिए जीवों की उपस्थिति उन्हीं अणु–परमाणुओं के मध्य रहती है, जिस प्रकार फूलों के माध्यम से मूलतत्त्व बीज मे आकर जीव उत्पत्ति के कारण बनते हैं ठीक उसी प्रकार रज–वीर्य के मूल तत्त्व प्राकृतिक रूप में एकत्र होकर विशिष्ट खोल में चले जाते हैं। वहीं पर जीवन बनना प्रारंभ हो जाता है। ऐसी प्राकृतिक प्रक्रिया आज भी हम विभिन्न जीव–जन्तुओं में देख सकते हैं। इसे अमैथुनी सृष्टि ही तो कहेंगे। यह हुई कीटों की बात। नर–नारी की उत्पत्ति की प्रक्रिया कुछ विशेष ईश्वरीय व्यवस्था के आधार पर सम्पन्न होती है। इसमें परमात्मा की साक्षात् व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। उसी की प्रेरणा से मूल तत्त्व विशिष्ट खोल में एकत्र होते हैं और एक लम्बी अवधि तक उसी व्यवस्था के तहत उनका परिरक्षण व परिपोषण होता है। जिस प्रकार गर्भ में शिशु माता के आहार–विहार से पेट में पलता है उसी प्रकार विशिष्ट खोल के जीव धरती के अन्दर प्राकृतिक रूप से आहार ग्रहण करते हैं।

शरीर पंचभौतिक होने के कारण इसे पाँचों तत्त्व मिलकर उस जीव के शरीर निर्माण व संवृद्धि में सहयोग प्रदान करते हैं। इसी कारण परमात्मा को माता और पिता दोनों कहा गया है। माता और पिता के कहने के पीछे यही गूढ़ार्थ छिपा हुआ है। धरती को माता की संज्ञा भी इसी के कारण है।

अमैथुनी सृष्टि क्यों? इसके पीछे परमात्मा का कर्मभोग सिद्धान्त जीवों को मोक्ष प्रदान करना है। श्रेष्ट आत्माएँ मोक्ष प्राप्त करके परमात्मा के आनन्द का भोग करती हैं और बद्ध आत्माएँ जन्म–मरण के चक्कर में बार–बार जन्म लेकर सुख–दुःख भोगती हैं। यदि परमात्मा उन्हें शरीर नहीं देगा तो आत्माओं को कर्मों का भोग कैसे प्राप्त हो सकेगा। इसी कर्म सिद्धान्त के कारण सृष्टि का निर्माण होता है जिसके लिए प्रथम सृष्टि का प्रारंभ अमैथुनी सृष्टि से उसे करना पड़ता है। ईश्वरीय व्यवस्था को कोई भी पूर्णरूपेण नहीं समझ सकता, केवल अनुमान एवं उसके द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान के आधार पर हम उसको जानने–समझने का प्रयत्न करते हैं। कारण का कारण नहीं होता। अमैथुनी सृष्टि का कारण परमात्मा है। परमात्मा का कोई कारण नहीं है। सब कुछ उसी प्रकार आकर समाप्त हो जाता है। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है। फल ईश्वराधीन हैं। कर्म के लेखा जोखा के लिए प्रत्येक जीव को सूक्ष्म शरीर प्रदान किया है। वह सूक्ष्म शरीर सर्गकाल में प्रत्येक जीव को प्रदान कर देता है। उसी में सारे कर्मों के संस्कार संचित रहते हैं।

अगर परमात्मा अमैथुनी सृष्टि से जीवों को शरीर न देता तो जीवों का अस्तित्व ही प्रकट में न आता, क्योंकि सन्तति की शृंखला कैसे जुड़ती? आधुनिक वैज्ञानिक विकासवाद का सिद्धान्त मानते हैं किन्तु यह सिद्धान्त अब नकारा सिद्ध हो रहा है क्योंकि इसके पीछे शरीर का परिवर्तन दूसरी योनियों में होना संभव नहीं दिखता है। इस दृष्टि से अमैथुनी सृष्टि ही सम्यक्रूपेण वैज्ञानिक दिखलाई पड़ती है। अमैथुनी सृष्टि जीवों का गर्भ पार्थिव परमाणुओं के सटकर मिलने से बनता है। इस प्रकार से वहीं एक विशेष खोल बन जाता है। उसी खोल में जीव युवावस्था तक पलता और बढ़ता है। ध्यातव्य है उसी अमैथुनी सृष्टि में श्रेष्ठ मानवों की उत्पत्ति होती है। फिर उनसे आगे की सृष्टि कर्मानुसार आगे चलती रहती है। ऐसे लोगों को देव और ऋषि की संज्ञा दी गई है। भारत देवभूमि इसी कारण कहलाता है। हम सब ऋषियों और देवों की संतान इसीलिए कहलाते हैं।

सृष्टि ईश्वर की अनुपम रचना है। अनुपम क्रीड़ा है। अनुपम दृश्य है। इसका प्रारम्भ भी अनुपम ढंग से होता है। ईश्वरीय ज्ञान वेद को बिना ऐश्वरी सृष्टि के मानव के कौन ग्रहण कर सकता? वही ज्ञान मानव के लिए नौका का काम करता है। इसी में बैठकर वह संसार–सागर को तरता है और मोक्ष प्राप्त करता है। इस ज्ञान का शृंखलाबद्ध विकास भी दिव्यात्माओं के द्वारा ही हुआ है। परमात्मा की इस अनोखी सृष्टि पर विचार करके उसके प्रति श्रद्धा का उत्पन्न होना अपेक्षणीय है।

आर्य समाज, रावतभाटा
वाया कोटा (राज.) 323307

क्रोध नियंत्रण

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

किसी भी बीमारी के इलाज के लिए सबसे पहले उसके होने के कारणों को जानकर उन्हें दूर करना सबसे ज्यादा जरुरी होता है। आज के इस गलाकाट प्रतियोगिता वाले भौतिकवादी युग में तनाव के कारण उत्पन्न क्रोध पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। हमारे जीवन में उत्पन्न होने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण तनाव और क्रोध पैदा होते हैं। क्रोध की अग्नि में क्रोध करने वाला व्यक्ति स्वयं जल कर भस्म हो जाता है। हम जिस पर क्रोध करते हैं उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश और इच्छा के बावजूद हम उसकी कोई हानि शायद न कर पाएँ लेकिन अपनी हानि अवश्य कर बैठते हैं। क्रोध की अवस्था में हमारा मस्तिष्क पूरी तरह कार्य नहीं कर पाता और हम उचित अनुचित का निर्णय नहीं ले पाते। इसीलिए क्रोध और तनाव की इस स्थिति से बचने के उपाय जानना जीवन में प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

- हम अपनी इच्छाओं को कम करके उन्हें नियंत्रण में रखते हुए प्रतिकूल परिस्थितियों से बचकर तनाव और क्रोध पर नियंत्रण रख सकते हैं। मन की किसी इच्छा के पूरा न होने पर पैदा होने वाली प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध और तनाव स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है।
- हम वेद को ईश्वरीय ज्ञान माने और वेद की आज्ञा मा क्रुध। क्रोध न करने का संकल्प लें और फिर क्रोध न करने के संकल्प को पूरा करने का पूर्ण पुरुषार्थ करते रहें। हम यदि मन में दृढ़ निश्चय कर लें कि मुझे क्रोध नहीं करना है तो निश्चित रूप से क्रोध और तनाव की किसी भी परिस्थिति से बच सकते हैं।
- कोई भी कार्य असंभव नहीं है और प्रत्येक कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व हम यदि मन में उसके गुण, दोषों पर विचार करके केवल सर्वहितकारी परोपकार के यज्ञीय कार्यों को करेंगे और अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरांत सर्वशक्तिमान ईश्वर वा अन्य सहयोगियों से सहायता की प्रार्थना करेंगे तो निश्चित रूप से उन कार्यों को सफलता पूर्वक पूरा कर पायेंगे इससे किसी भी कार्य में कोई प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न नहीं होगी और न ही तनाव या क्रोध पैदा होगा।
- हम स्वार्थ की भावना का त्याग करके क्रोध को समाप्त कर सकते हैं। क्योंकि स्वार्थ के वशीभूत किए जाने वाले कार्यों में दूसरों का अहित होने की संभावना होती है और उनके प्रतिरोध से प्रतिकूल परिस्थितियाँ, क्रोध, तनाव आदि उत्पन्न होते हैं।
- जैसी संगत वैसी रंगत। हम दैनिक जीवन में यथासंभव शांत प्रकृति के विद्वानों के साथ रहेंगे तो क्रोध को दूर रख पायेंगे यदि हम क्रोधी, असंयमी, स्वार्थी लोगों के साथ रहेंगे तो यह अवगुण जाने अनजाने हमारे अंदर भी आ जायेंगे।
- जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं वैसा व्यवहार हम खुद दूसरों के साथ करें अर्थात् हम सभी से प्रेम से परिपूर्ण अच्छा व्यवहार पायेंगे और तनाव क्रोध जैसी स्थिति से बचे रहेंगे।
- 'जैसा अन्न वैसा मन' भोजन का हमारे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है इसलिए तेज मिर्च मसाले, मांसाहारी, अण्डे, शराब आदि तामसिक भोजन का सर्वथा परित्याग करके हम यदि सात्विक अन्न, दूध–दही शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव हमारे मन पर पड़ेगा और हम क्रोध जैसी बुराई को अपने जीवन से निकाल पायेंगे।
- मौन रहने का अभ्यास क्रोध को दूर रखने में अत्यंत सहायक होता है अतएव प्रतिदिन दैनिक संध्या आदि के उपरांत मौन साधना अवश्य करें।
- प्रतिदिन ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना करते समय हम गायत्री महामंत्र का जाप करते हुए **धियो यो नः प्रचोदयात्** पर विशेष बल दें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करें और क्रोध आदि व्यसनों को हमसे दूर रखें।
- यदि किसी प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध उत्पन्न होने की संभावना हो तो बलपूर्वक शांत एवं मौन रहने का प्रयास करें और यदि अपना पक्ष रखना पड़े तो अपने सत्य पक्ष को पूरी दृढ़ता के साथ लेकिन अत्यंत संयम और मर्यादित ढंग से रखें।
- किसी प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध उत्पन्न होने पर तुरंत प्रतिक्रिया देने से बचें और थोड़ी देर विलंब करके ठंडा पानी पीकर ईश्वर का ध्यान करते हुए मौन रहकर मन के शांत होने की प्रतीक्षा करें।
- यदि कभी क्रोध कर बैठे तो मौन समाधि लगाकर ईश्वर का ध्यान करते हुए ''मैं फिर कभी क्रोध नहीं करुँगा'' ऐसा संकल्प लेकर प्रायश्चित अवश्य करें।

इन बातों को यथासंभव याद रखें, दोहराएँ और क्रोध और तनाव को जीवन से दूर रखकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करें।

602 जी एच 83
सैक्टर 20 पंचकूला,
मो. 09467608686

लिखने से पहले

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

मैं कागज पेन लेकर लिखने ही बैठा था कि वे चारों साकार होकर मेरे पास आ धमके। उनमें से एक ने मुझसे पूछा, ''क्या कर रहे हैं आप?''

''देख नहीं रहे, लिख रहा हूँ। '' मैंने उपेक्षा भाव से कहा।

''क्या अकेले ही लिख रहे हैं?''

''हाँ, अकेले ही। ''

''नहीं आप झूठ बोल रहे हैं? '' वो चारों एक साथ चीखे।

''बताइये, कौन है मेरे पास?'' मैंने भी जोर से कहा।

''छोड़िये भी, आप यह बताइये कि लिखने से पहले आप यह तो सोचते होंगे कि यह लिखूँ या वह लिखूँ?''

''हाँ, वह तो है।''

''बस, वह सोच मैं हूँ और मेरा नाम है–मन। मेरा स्वरुप है–**संकल्प–विकल्पात्मकं मनः।** अर्थात् मैं संकल्प–विकल्प या अनिश्चयात्मक स्थिति में रहता हूँ।''

''हाँ।''

''तो सुनिये, **'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः।''**

इसके बाद उन चारों में से दूसरे ने मन को टोका, और कहा,

''अरे भाई, लेखक महोदय से तुम ही पूछोगे या मुझे भी पूछने का मौका दोगे?''

''लो तुम ही पूछ लो।'' यह कह कर मन मौन हो गया।

''लेखक महोदय् आप संकल्प–विकल्प से ऊपर उठ कर यह तो निश्चित रूप से कहते होंगे कि मैंने जो कुछ लिखा है, ठीक ही लिखा है, अब उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नही करुँगा।''

उनमें से दूसरे ने प्रश्न दागा।

''हाँ, ऐसा ही सोचता हूँ।''

''बस, यही निश्चयात्मक वृति मैं हूँ। मेरा नाम है– बुद्धि। मेरी परिभाषा है– 'निश्चयात्मिका बुद्धिः।''

''अच्छा तो आप भी मुझ पर कृपा कर रही हैं। क्या विशेषता है आपकी! मैंने बुद्धि को टोका।

''गायत्री मंत्र में साधक मुझे पाने की कामना करते हैं– **'धियो यो नः प्रचोदयात्।** '' अर्थात् हे ईश्वर हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ कार्यों की ओर प्रेरित कीजिए। ''

इसके बाद उनमें से तीसरा चहक उठा, उसने बुद्धि को फटकारा और कहा, 'मेरी भी पूछ लो।'' इतना कह कर बुद्धि चुप हो गई।

तब तीसरे ने प्रश्न किया, ''लेखक बन्धु, आप आकाश पर तो लिखते नहीं होंगे। किसी कागज या कापी पर ही लिखते होंगे और उसी पर तुम्हारा लिखा हुआ सुरक्षित रहता होगा।''

''हाँ, आप ठीक ही कह रहे हैं।''

''तो जिस पर लिखा हुआ तुम्हारा लेख सुरक्षित रहता है, मैं वही हूँ और नाम है–चित्त। मुझ में जन्म–जन्मान्तरों के संस्कार सुरक्षित रहते हैं।''

तब उनमें से चौथा भी अपने आपको नहीं रोक पाया और बोला,'' आप सब तो पूछ चुके, अब तो मेरी बारी है।''

''नाराज मत हो, जो पूछना है पूछ लो।'' यह कह चित्त ने भी चुप्पी साध ली।

तब चौथे ने पूछा,'' लेखक महाशय!, जब आप कुछ लिख चुके होंगे, तब आप को अपने लिखे पर गर्व होता होगा, प्रशंसा पाने की इच्छा भी होती होगी?''

''हाँ, ऐसा ही होता है।''

''बस उसी अहंभाव की तृप्ति या प्रशंसा प्राप्त करने की प्रवृत्ति मैं हूँ और मेरा नाम है–अहंकार।

उसके बाद उन चारों ने एक साथ कहा, ''हम अपना परिचय दे चुकें हैं। अब आप अपना परिचय दीजिए।''

''मैं तो बहुत सूक्ष्म हूँ, बहुत छोटा हूँ। मेरा क्या परिचय होगा?'' मैंने सकुचाते हुए कहा।

''नहीं, आपको अपना परिचय देना ही होगा।'' वे चारों एक साथ बोले।

तब मैंने कहा, ''क्या पूछना चाहते है आप?''

तब उन्होंने एक साथ पूछा,''कौन है आप?

''तुम्हारा बाप!''

''आप तो बड़े अशिष्ट हैं। 'वे एक साथ चीखे।

''यदि आपको 'बाप' शब्द अशिष्ट लगता है तो 'पिता' शब्द का प्रयोग कर देता हूँ। मैं हूँ तुम्हारा पिता और तुम्हारे पिता के पिता का नाम है–परमात्मा। वह तुम्हारा भी पिता है।

''यदि परमात्मा हमारा पिता है तो

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

वेदायुर्वेदम्

ऋतुचर्या ग्रीष्म एवं प्रावृट् (आषाढ़ व श्रावण मास)

● रवीन्द्र पोतदार

दोषों के सञ्चय प्रकोप और प्रशमन (शांत) निमित से वर्षा, शरद्, हेमन्त, वसन्त, ग्रीष्म और प्रावृट ये 6 ऋतुएँ होती है। भाद्रपद और आश्विन को वर्षा, कार्तिक–मार्गशीर्ष को 'शरद्' पोष–माघ को 'हेमन्त' फाल्गुन और चैत्र को वरान्त, वैशाख–ज्येष्ठ को ग्रीष्म तथा आषाढ़ एवं श्रावण (सावन) को प्रावृट् ऋतु कहते है। सूर्य वर्तमान में उतरायण काल में होने से प्रबल है एवं जल, पृथिवी, वृक्ष एवं मनुष्यादि सभी प्राणियों के बल को खींच लेता है उनके स्नेहांश को कम कर देता है अतएव इसे आदान काल कहा है। यह क्रिया वायु के माध्यम से होती है क्योंकि वायु योगवाही है।

औषधियाँ एवं जल ग्रीष्म ऋतु में सार रहित रुक्ष एवं अत्यंत हल्की हो जाती है जो कि प्रयोग में लाने से शुष्क देह वाले प्राणियों में जल एवं गर्मी से रुक्षता बाधुता एवं निशदता (स्नेह की कमी) के कारण वायु का सञ्चय करती है। यह वायु सञ्चय प्रावृट ऋतु में भूमि के जल के द्वारा अधिक गीली होने पर कियन्न (शुष्क) देह वाले प्राणियों में शीत–वात व वर्षा के कारण वातिक विकारों को उत्पन्न करता है।

प्राकृत दशा में अर्थात् वायु, जल, पृथिवी एवं अंतरिक्ष की शमावस्था अर्थात् निर्दोष पर्यावरण की स्थिति में पित्तजन्य रोगों का शमन, हेमन्त में कफजन्य रोगों का ग्रीष्म एवं वातजन्य रोगों का शमन शरद् ऋतु में स्वभाव से ही हो जाता है। अथवा शास्त्रोक्त रीति से इनका निर्हरण वमन–विरेचन–बस्ति आदि आयुर्वेदोक्त पंच कर्मो द्वारा करना चाहिए। ध्यान रहे षड्कर्म, नेति धोती तथा हठयोग आदि क्रियाएँ अशास्त्रीय एवं निषिद्ध हैं। जो आहार–विहार, एवं औषध पथ्यकारक–धार्मिक मनुष्य के लिए सुखकारक होती हैं वे ही अपथ्य के कर्ता–दुष्ट अधार्मिक व्यक्ति के लिए दुःख का कारण होती हैं। अतः धर्म का लाभ होवे ऐसे मनुष्य की चिकित्सा करने से पुण्य लाभ होता है। यह आयुर्वेद का प्रमुख सिद्धांत है। (दृष्टव्य–ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

ग्रीष्म ऋतुचर्या :– इस ऋतु में तालाब, नदियाँ, सुन्दर बगीचे, अच्छी सुगन्ध वाले चन्दन, सुगन्धित पुष्पों की मालाएँ, ताड़ के पंखों की वायु, शीतल भवन एवं अत्यंत हल्के श्वेत वस्त्र सेवनीय है। शर्करा एवं खाण्ड से युक्त, सुगन्धित तथा बर्फ से ठण्डे किए हुए पेयों का सेवन करना चाहिए। जल–घृत तथा शर्करा से युक्त सत्तुओं का सेवन करना चाहिए। मधुर द्रव जिसमें अधिक हो, ऐसा घृतयुक्त भोजन करना हितकारी है। रात्रि के समय शक्कर से मीठा किए हुए उबले दूध के साथ भोजन करना चाहिए। छत के ऊपर खुली हवा में चन्दन के पानी का वदन पर लेप करके सोएँ। नमकीन तेज मिर्च, खट्टे मसालेदार पदार्थ त्याग दें। अधिक व्यायाम न करें। मधुर, शीतल द्रव और स्निग्ध (घृत युक्त) अन्न तथा पेय हितकारी हैं। जैसे शक्कर, घी और पानी युक्त (सत्तू का घोल), दुग्ध, सांठी चावलों का भात लें। मद्य लोग न पीयें। चन्दन–खस को गीली कर उसकी हवा लें। गले मे मोतियों की माला पहनें व ठण्डे बगीचों में घूमें, बैठें, सौएँ शीतल जल और शीतल पुष्पों का सेवन करें। सत्तू से तात्पर्य जौया चने को भूनकर उसे पीस लें तथा उसमें घृत एवं ठंडा पानी न अधिक–द्रव न ठोस हो ऐसा मिला लें, जिसे अंगुली से चाट सकें। भोजन में पुराने चावल–गेहूँ मूंग की दाल, पेय में दूध, गन्ने का रस (बिना कुछ मिलाए) संतरा, मौसम्बी, सेब, आंवले का मुरब्बा, केला, चीकू, अनार, अंगूर, किशमिश खाएँ। औषधियों में अष्ट वर्ग, जीवनीय गुण, शतावरी, मूसली, आंवले, गिलोय, मुक्ता, प्रवाल शुक्ति इनकी पिठठी खावें। कच्चे आमों का सेवन प्याज के साथ मीठी चटनी (कन्चुमर) बना कर करें वा उन्हें उबालकर पन्ना बनाकर मीठा तथा ठण्डा कर पीवें। पके हुए आमों का सेवन एक बार वर्षा हो जाने पर, जो अक्सर इस माह (मई) में हो जाती हैं, करें।

देशी आमों को गिलगेला करने पर मुँह की ओर से एक पानी जैसा पदार्थ (चेप) निकलता है उसे 5/10 बूँद निकालकर फेंक कर खावें यह चेप पित्त कारक एवं रोग कारक है। यद्यपि अन्य आमों तथा तोतापरी में ऐसा नहीं होता अतः वे आम कम गुण कारक होते हैं। आम चूसने के बाद दूध पीयें वा आम रस में चुटकी भर सोंठ व स्वादानुसार सेंधा नमक व दूध मिलावें। इन दिनों में अत्यंत गर्म हवा में रहने अथवा सावधानी नहीं बरतने से अक्सर लू लग जाती है जिससे त्वचा गर्म हो जाती है। यह इतनी भयंकर भी हो जाती है कि इससे मृत्यु तक हो जाती है, अगर उसे तुरंत ठंडक न पहुँचायी जावे या ठंडा जल, आम का पन्ना इत्यादि रोगी को नहीं दिया जावे। लू के बुखार का अत्यंत साधारण उपाय है जिससे यह तुरंत उतारी जा सकती है।

लू का उपाय – लगभग 1लीटर ठंडे पानी में 1छोटे कच्चे आम की केरी के टुकड़े, 1 साधारण प्याज के टुकड़े, 1 पकी इमली तथा चने की सूखी भाजी ये चारों अथवा जो भी उपलब्ध हो उसे पानी में डाल दें। रोगी को कम से कम कपड़ों में जमीन पर दरी पर लिटा दें। उसके हाथों की ओर कमर से सटा दें। अब सूती कपड़े का पतला तौलिया (गमछा) लेकर उसे उस पानी में डुबा कर हल्का निचोड़ कर झटक दें। इस तौलिये को चौड़ाई से पकड कर रोगी के सिर की ओर रख कर एक सिरा दोनों हाथों से पकड़कर रिर–मुंह–छाती पेट–जांघ व पावों से ऐसे निकाले कि वह तौलिया अपनी पूरी लंबाई में क्रमशः इन अंगों के ऊपर से चिपटते हुए निकले। पश्चात् उसे झटककर पुनः पानी में भिगोएँ एवं निचोड़ कर इसी विधि को 3/5 व 7 बार करें। अन्त में उसी तौलिये से मुख, हथेली, एवं पगथली को पोंछ दें। अगर एक बार में उष्णता खत्म न होवे तो सुबह–शाम–दोपहर को पुनः इस क्रिया को दोहरावें।

प्रावृट् ऋतु चर्या– इस ऋतु में आकाश मण्डल पश्चिम दिशा की वायु से लाये हुए तथा बिजली की चमक के साथ कुछ बरसने वाले और भयंकर गर्जन करने वाले बादलों से व्याप्त रहता है एवं पृथिवी–कोमल तथा श्याम रंग की घास से व्याप्त तथा शक्रगोपे (इंद्र बधु–वीर बहूरी–लाल रंग की कालीन जैसा छोटा कीट) से उज्ज्वल तथा कदम्ब, नीद, कुरान, सार्ज, केतकी से भूषित रहती है।

ग्रीष्म ऋतु के नाश होने पर (लगभग 10 जून के बाद) मधुर, अम्ल और लवण रसों का सेवन करना चाहिए। मन्दोष्ण दुग्ध, तेल व घृतों को खाना चाहिये। पिछली ऋतुओं में सेवित वायु को स्नेहन स्वेदन आदि पंचकर्म विधि से नष्ट करे। नदी का पानी, रुक्ष तथा उष्ण पदार्थ, सत्तू, धूप में बैठना या भ्रमण करना, व्यायाम, दिन में सोना, एक वर्ष से पुराने अन्न, रुक्ष और शीतल पदार्थ जल न खावें। जौ की रोटी, लस्सी, दलिया, पुराने चावल खावें। सीधी वायु के सेवन से बचें मुलायम शय्या पर शयन करे। सम्पूर्ण खुले में उपलब्ध जल कीचड़, विष्ठा आदि से दूषित हो जाता है अतएव इसे शौच, स्नान, पान आदि में भी प्रयुक्त न करें।

इस तरह प्रत्येक ऋतु में जो व्यक्ति पथ्य आहार–विहार तथा वमनादि पञ्चकर्मों का सेवन करता है वह कभी भी भिन्न–भिन्न ऋतु में उत्पन्न होने वाले भयंकर रोगों से आक्रान्त नहीं होता।

साधारणतया इस ऋतु के अन्त में अर्थात् श्रावण मास में पूर्व में सञ्चित वायु के प्रकोप से बचने के लिए दुग्ध एवं गोमूत्र की बस्तियों का क्रमशः सेवन करना चाहिये। अनुपलब्ध होने पर बाजारों में प्रचलित रेडीमेड बस्ति भी उपयोग में लाई जा सकती है परन्तु उनसे अपेक्षित लाभ नहीं होता।

इन सब के साथ पञ्च महायज्ञ जो आचार और उससे रहित अनाचार है उसका महत्व बना रहता है अर्थात् आचार वान् वा पथ्य पालन करने वाले पुरुष के लिये ही आयुर्वेद का विधान है। वर्त्तमान में जो प्रदूषण सर्वत्र व्याप्त है उसका मुख्य कारण अनाचार ही है और इन ऋतुओं की विकृति अदृष्ट (अधर्म) से होती है! मात्र शीत, उष्ण, वायु और वर्षा का वैपरीत्य औषधियों और जलों को बिगाड़ देता है। विकृत हुई इन औषधियों और जलों के सेवन से अनेक प्रकार के अदृष्ट रोग (जैसे वर्तमान के चिकनगुनिया, मनेन्जायरिस, आँख की छूत का रोग) आदि तथा महामारियाँ उत्पन्न होती है।

चन्देसरा, उज्जैन
म.प्र.– 456664

☞ *पृष्ठ 07 का शेष*

लिखने से पहले...

हमारी माँ कौन है? चारों एक साथ जिज्ञासा पूर्वक पूछ बैठे।

''तुम्हारी माँ का नाम है–प्रकृति।''

''क्या वही प्रकृति जिसमें नदी, पर्वत, सरोवर, समुद्र, सूर्य चन्द्र रहते हैं।''

''नहीं, उसे तो सृष्टि कहते हैं।''

''फिर कैसी है वह प्रकृति?''

''सत्व, रज और तम, त्रिगुणात्मिका है वह प्रकृति ! गुणों की साम्यावस्था का नाम ही प्रकृति है। ईश्वरेच्छा से क्रियाशील होने से उसमें विकृति आ जाती है तब निर्माण प्रक्रिया शुरु हो जाती है।''

''वह हमारी माँ कैसे हो गई?'' उन्होंने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

''उसी से तुम्हारा जन्म हुआ है?''

''कैसे?''

''सुनो, प्रकृति में विकृति आने से महान (बुद्धि), महान से अहंकार, अहंकार से तन्मात्राएँ, उसके बाद मन तथा ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ तथा पंच भूतादि। यही है प्रकृति का क्रम।

''पर यह प्रकृति तो जड़ है।''

''तुम (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार भी तो जड़ हो।

''हम जड़ क्यों है?''

''क्योंकि तुम जड़ प्रकृति की संतान हो।

''पर हम तो चेतनवत् व्यवहार करते हैं।'' चारों ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

''यह मेरी आत्मा की कृपा है।

''इस मानव सृष्टि में हमारी क्या भूमिका होगी?''

''मानव आत्मा को जड़त्व भाव से मुक्त करना। मुक्ति की कामना करने वालों को यह संदेश देना कि तुम प्रकृति की उपज नहीं, परमात्मा की संतान हो। परम आनन्द की प्राप्ति करना ही तुम्हारा लक्ष्य है।

चारों एक साथ सहर्ष बोल उठे–

''आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।''

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर, हरिद्वार
मो. 9639149995

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द गायत्री कथा

मिलता है कि भक्त कुछ सुनना नहीं चाहता। भूल जाना चाहता है वह सब–कुछ। पुकार कर कहता है मत बुलाओ मुझे। इस आनन्द में डूब जाने दो! जब यह अवस्था आ जाए तो संकल्प करना चाहिए कि मेरा संसार के साथ, परिवार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। केवल मैं हूँ और मेरे भगवान् हैं, शेष तो किसी की आवश्यकता इस समय नहीं रहती। वे पति हैं, मैं उनकी पत्नी हूँ। वे स्वामी है, मैं उनका दास हूँ। वे मेरे प्रियतम है, मैं उनकी चाहने वाली प्रेमिका हूँ।

कई लोगों का कहना है कि अपने–आपको स्त्री मानकर और भगवान् को पति मानकर ध्यान लगाने से शीघ्र ही सफलता मिलती है, किन्तु किसी भी रूप में ध्यान लगाओ, उस समय भूल जाओ कि तुम्हारा और भी कोई है। ऐसे अनुभव करो कि मैं हूँ और मेरे भगवान् और तीसरा कुछ भी नहीं है।

जब ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाए तो जाप प्रारम्भ करो– हृदय से नहीं कर सकते तो होंठों से करो। परन्तु तुम्हारा शब्द किसी को सुनाई न दे; चाहे तो माला अपने हाथ में ले लो। माला केवल गिनती रखने के लिए है और यह गिनती कई बार आवश्यक होती है। ऐसा लिखा है कि एक दिन में पच्चीस हज़ार गायत्री का जाप करने के पश्चात् मन स्वयं ही खड़ा हो जाता है; वश में हो जाता है। आसन के द्वारा भी मन वश में हो जाता है। यदि मनुष्य तीन घण्टे और छत्तीस मिनट तक एक ही आसन से हिले बिना, कष्ट बिना, आँख झपके बिना बैठ सके तो उसका मन भी खड़ा हो जाता है। मन को वश में रखने के लिए ये स्थूल उपाय हैं। जो मनुष्य कहते हैं कि मन वश में नहीं होता, जिसके विषय में लोगों की धारणा है कि–

मन लोभी, मन लालची, मन चंचल, मन चोर।
मन के मते न चालिए, बिलख–बिलख मन रोय।।

इसे वश में करने के लिए इस सरल ढंग को अपनाकर देखिऐ। जिस प्रकार मेघ में विद्युत् चमकती है, इसी प्रकार मन भगवान् की ओर संकेत करेगा, उनकी ओर चलेगा। मन की यह बिजली बहुत शक्तिशाली है। साधारण बिजली ही बहुत शक्तिशाली है। बिजली से आप प्रकाश करते हैं, पंखे चलाते हैं, मशीनें चलाते हैं। बम्बई में मकानों के अंदर बिजली के लिफ्ट लगे हैं। बिजली से बड़ी–बड़ी रेले–ट्रामें दौड़ती हैं। बुद्धि से बिजली वश में कर ली जाए तो इतने काम करती है वह! इनसे अधिक भी काम करती है। परन्तु वही बिजली नियन्त्रण से बाहर हो जाए तो नाश और विध्वंश भी कर देती है। कईं–कईं विशाल अट्टालिकाओं को जलाकर भस्मसात् भी कर देती है। यह मन भी ऐसा ही है। कईं दिनों से आपने इसको नियन्त्रण से बाहर कर रखा है। जब बुद्धि के साथ इसको वश में करो, तो यह वहाँ पहुँचेगा जहाँ आपको जाना है–

मन पंछी तब लग उड़े विषय–वासना माहिं।
ज्ञान–बाज की झपट में जब लग आया माहिं।।

ज्ञान का बाज़ क्या है? वह बुद्धि जिसे परमात्मा ने प्रेरणा दी हो, जो अपने–आपको परमात्मा के अर्पण करके उसकी प्रेरणा से चलती हो। इसलिए गायत्री में एक ही प्रार्थना है– 'हमारी बुद्धि को अपनी ओर ले चल।'

अंत में एक बार फिर यह कह देना चाहता हूँ कि जाप मन से करना चाहिए। प्रारंभ में यदि न भी हो तो अन्त में मन से जो बात कही जाए, उसका अधिक प्रभाव पड़ता है। ऐसे जाप को मानसिक जाप कहते हैं।

.... क्रमशः

☞ पृष्ठ 04 का शेष

मनु–स्मृति का महत्व...

तो वे कहते कि हमें शूद्र को भी ब्राह्मण बनाने का प्रयास करना अपेक्षित है।

आर्य समाज का यही दृष्टिकोण रहा है कि सत्य को जानने के लिए अध्ययन–अध्यापन तथा प्रेमपूर्वक सवांद की परम्पराओं को चलाया जाए अन्यथा इस प्रकार के विषवमन से आज मानव–मानव में जो दुराव और कटुता की भावना प्रश्रय पा रही है इससे किसी का भी भला होने वाला नहीं है। डॉ. मदनमोहन जावलिया जी अपनी इस व्यथा को आर्य जगत् पत्रिका के अंक (21 मई 2000) में इस प्रकार व्यक्त करते हैं–'धर्मशास्त्रकार, विधिप्रणेता तथा वेदानुमोदित स्मृति प्रदाता महर्षि मनु पर पंक उछालने वाले लोग न अम्बेडकरवादी बौद्धमत और न ही दलितों का कोई भला कर रहे हैं। मनु की मूर्ति हटाने एवं उसके स्थान पर अम्बेडकर की मूर्ति लगाने की मांग हठधर्मिता एवं अलोकतांत्रिकता की परिचायक है। न्यायालय में मनु क्या राम, कृष्ण, शंकराचार्य, बुद्ध, महावीर, अम्बेडकर की भी मूर्तियाँ लगें। पर खेद है कि दलितों के नाम से निर्मित दलों एवं राजनीतिक दलों के 'दलित बोट बैंक' को हथियाने के लोभ में सवर्ण हिन्दुओं को अपमानित कने का कुचक्र रचा है, जिसमें प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से साम्यवादी तथा मुस्लिम संगठन भी शामिल हो गए हैं। हमारी दृष्टि में राजनीतिक व्यूह रचकर भोले–निर्धन हिन्दुओं और तथाकथित दलितों को बहकाने का मार्ग त्यागर इन तथाकथित दलित नेताओं को शुद्ध हृदय से विशुद्ध मनुस्मृति का अध्ययन करना चाहिए। स्थान–स्थान पर मूर्तियों के अम्बार लगाने की अपेक्षा उस शक्ति को शास्त्राध्ययन की परिपाटी में लगाना ज्यादा जरूरी है।'

हमारे दृष्टिकोण में मनुस्मृति को जलाना, मनु की निन्दा करना या उनकी मूर्ति आदि हटाना दलितों की स्थिति को संवारने की दिशा में कोई समाधान नहीं है बल्कि इससे सामाजिक समरसता और व्यवस्था के और अधिक चरमराने की संभावना है। इसका समाधान यह है कि हम मनुस्मृति की उस आदर्श वर्णव्यवस्था को मूलरूप से समझें एवं उसका कार्यन्वयन पूरी ईमानदारी के साथ करें। कहीं भी किसी बात पर विवाद हो तो उसे सप्रेम बातचीत के द्वारा हल किया जाए। दुःख की बात है कि इस दिशा में किसी भी तथाकथित दलितों के मसीहा कहलाने वाले ने प्रयास नहीं किया। मनु जी के प्रति श्री अम्बेडकर जी के दृष्टिकोण के बारे में डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी लिखते हैं–'... यद्यपि जन्मना जाति–पाति, ऊँच–नीच, छूत–अछूत जैसी कुप्रथाओं के कारण अपने जीवन में उन्होंने जिन उपेक्षाओ, असमानताओं और अन्यायों को भोगा था, उस स्थिति में कोई भी स्वाभिमानी शिक्षित वही करता जो उन्होंने किया किन्तु मनु और मनुस्मृति को गंभीरता एवं पूर्णता से समझे बिना, पूर्वाग्रहों के कारण, उन्होंने मनु के विषय में जो व्यवहार किया, वह भी सर्वथा अनुचित एवं अन्यायपूर्ण था। एक कानूनविद् होने के नाते उन पर इस अनौचित्य की जिम्मेदारी अधिक आती है। उन्होंने संविधान में प्रावधान किया है कि 'अनुचित निर्णय से निरपराध को दण्ड नहीं मिलना चाहिए, चाहे अपराधी मुक्त हो जाए।' किन्तु उन्होंने अपने जीवन में इसका पालन नहीं किया। परवर्ती समाज द्वारा बनायी गई जन्माधारित सामाजिक व्यवस्थाओं को मनु पर थोंपकर अनावश्यक रूप से उन्हें दोषी घोषित करते रहे और उनके विरुद्ध निन्दा अभियान चलाते रहे, आर्य (हिन्दू) समाज में प्रतिष्ठित एक महर्षि के लिए बेहद कटु वचनों का प्रयोग करते रहे। हालांकि तत्कालीन बहुत से व्यक्ति उनका ध्यान बार–बार इस तथ्य की ओर आकर्षित करते रहे कि मनु के विषय में अभी उनकी कुछ भ्रान्तियाँ और पूर्वाग्रह हैं, वे उन्हें दूर कर लें किन्तु वे पूर्वाग्रहों पर अड़े रहे। उसके कई कारण थे। जो कुछ तब वे मनु के विषय में लिख चुके थे, शायद उसको नहीं छोड़ना चाहते थे, और उन्हीं के शब्दों में 'उन पर मनु का भूत सवार था और उनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे उसे उतार सकें।' सत्य है वे उस भूत को जीवन पर्यन्त नहीं उतार सके और जीवन के उपरान्त उसे अपने अनुगामियों पर छोड़ गए। लेकिन क्या 'भूत सवार होना' सामान्य स्थिति, सन्तुलित विचार, विवेकपूर्वक सही समीक्षा का परिचायक माना जा सकता है? यह भी उनके जीवन की वास्तविकता है कि वे संस्कृत के ज्ञाता नहीं थे। जैसा कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है, उन्होंने मनु सम्बन्धी समस्त अध्ययन–विश्लेषण अंग्रेजी भाषा में लिखी आलोचनाओं के माध्यम से ग्रहण किया है, अतः वे मौलिक–प्रक्षिप्त आदि पहलुओं, श्लोकों के प्रसंगों आदि पर विचार नहीं कर सके। जो अंग्रेजी समालोचनाओं में पढ़ा, वही धारणाएँ बन गईं अन्यथा वे मनु और मनुस्मृति का इतना अविचारित विरोध नहीं करते।'

इस बात का कोई एक भी प्रमाण नहीं दे सकता है कि मनु जी ने शूद्र को कहीं पर भी अस्पृश्य कहा हो। इसके विपरीत उन्होंने शूद्र को निन्दित व घृणित मानने के स्थान पर उसे शुचि, उत्तम तथा उत्कृष्ट आदि शब्दों से सम्बोधित किया है। उन्होंने अपराधों के लिए ब्राह्मण को सबसे अधिक दण्ड तथा शूद्र को सबसे कम दण्ड देने का विधान किया है। उसे गुलाम व दास आदि न मानकर उसे पूरा वेतन देने का भी आदेश दिया है। पता नहीं क्यों और कैसे राजनैतिक आधार पर अछूत, दलित, पिछड़ी और जनजाति के लिए शूद्र शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है जबकि मनु जी ने शूद्र को इस कोटि में नहीं रखा है। कुछ लोगों ने अपने पूर्वाग्रहों, अधकचरे अध्ययन तथा राजनैतिक एवं सामाजिक लाभ उठाने के लिए मनु पर मनमाने आरोप लगाने का अपराध किया है। हमारा यह निवेदन है कि जाति के नाम पर घृणा, द्वैष और अलगाववाद के बीज बोने के स्थान पर मनुमहाराज की व्यावहारिक व वैज्ञानिक आदर्श वर्णव्यवस्था को समझना चाहिए और सामाजिक विद्वैष को समाप्त करने हेतु उसका ईमानदारी से प्रचार–प्रसार व क्रियान्वयन करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए। कुछ पढ़े–लिखे लोग जब स्वयं भ्रमित होकर पूर्वाग्रहों के दायरे में रहकर किसी व्यवस्था को गलत ढंग से समाज में रखते हैं तो जनसाधारण बहुत दूर–दूर तक भटक जाता है। इस भटकाव से व्यक्ति का अपना अहित तो होता है मगर समाज और राष्ट्र को भी इसका बहुत अधिक ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ता है।

महर्षि दयानन्द धाम,
महादेव, सुन्दर नगर–174401 (हि.प्र.)

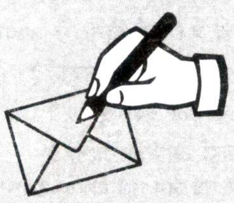

पत्र/कविता

भारत वीर सपूत- नरेन्द्र मोदी

नेता के गुण अब सुनो! सभी लगाकर ध्यान।
जिसमें गुण है उसे, नेता लेना मान।।
नेता लेना मान, वेद पथ का जो हामी।
जन सेवक निर्भीक, सत्यवादी जो नामी।।
चरित्रवान, गुणवान, सदाचारी मतवाला।
देश भक्त बलवान, वही है जैसा आला।।
सच्चा नेता है सुनो! नरेन्द्र मोदी वीर।
ईश्वर भक्त महान है, देश भक्त रणधीर।।
देश भक्त रणधीर, गरीबों का हितकारी।
कमजोरों का सबल सहारा, है तपधारी।।
रात–दिवस जो काम, देश हित के करता है।
हिम्मत का है धनी, न दुष्टों से डरता है।।
बन्द किए हैं वीर ने, बड़े–बड़े सब नोट।
बेईमानों में सुनो! मारी भारी चोट।।
मारी भारी चोट, अचम्भित है जग सारा।
नेता है नीतिश, दाव मौके पर मारा।।
पापी बेईमान, देश से मिट जाएंगे।
आंतकवादी चोर, यहां न रह पांएगे।।
नरेन्द्र मोदी सन्त है, भारत वीर सपूत।
भारत को जो हर तरह, कर देगा मजबूत।।
कर देगा मजबूत, प्रसन्न हैं सब नर–नारी।
करती है गुणगान, देश की जनता सारी।।
ईश्वर से है विनम्र, वर्ष सौ मोदी जीवे।
''नन्दलाल'' कह वेद–सुधा, जीवन भर पीवे।।
प्यारे भारतवासियो! कहूं जोड़ कर हाथ।
नरेन्द्र मोदी का सभी, मिलकर के दो साथ।।
मिलकर के दो साथ, करेगा सबकी सेवा।
सेवा से ही मिले, सुयश की पावन मेवा।।
''नन्दलाल'' है बड़ा, बहादुर यह नर बंका।
फूंकेगा हनुमान, पापियों का गढ़ लंका।।

पं. नन्दलाल निर्भय आर्य सदन बहीन,
जनपद पलवल (हरियाणा)
चल भाष : 09813845774

राष्ट्रपति पद हेतु श्री कैलाश सत्यार्थी जी का नाम प्रस्तावित हो

भारत के राष्ट्रपति का चुनाव इस वर्ष जुलाई में निर्धारित है जबकि उपराष्ट्रपति का चुनाव अगस्त में। दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दल अपने–अपने उम्मीदवारों को चयन करने में जोर–शोर से व्यस्त हैं और अपने प्रत्याशियों को चुनावी मैदान में उतारने का मन बना रही हैं। चुनाव में संयुक्त राजनीतिक गठबंधन (यूपीए) और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के बीच बड़ी भारी प्रतियोगिता की सम्भावना है। निर्वाचक मंडल (इलैक्टोरल कालिज) के मतदाताओं की क्रास वोटिंग के कारण किसी एक प्रत्याशी की सहमति को ले कर सारे अनुमान गलत हो सकते है।

राजनीतिक पार्टियां एक ऐसे सामान्य उम्मीदवार को चुनाव में उतारने पर सहमति नहीं बना पायेंगी जिसकी साख, सम्मान, स्वीकार्यता सब को मान्य हो। डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बिना किसी प्रतियोगिता को राष्ट्रपति बने क्योंकि वह न तो किसी दल से प्रभावित थे और न ही राजनीति में थे। उन को सब दलों और देश की जनता का आर्शीवाद था। वह एक बहुत ही सम्मानित व जन प्रिय भारत के राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति के चुनाव में सहमति बनाना महान तथा सराहनीय कार्य है। वर्तमान स्थितियों में डॉ.कलाम जैसे छवि व बुद्धिजीवि, योग्य व सर्वमान्य व्यक्ति श्री कैलाश सत्यार्थी जी प्रतीत होते है। जिन्हें बच्चों की शिक्षा के मौलिक अधिकार की अथक संघर्ष के कारण प्रतिष्ठित अन्तराष्ट्रीय ''नोबल'' शान्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने भारत व संसार भर के बच्चों के शोषण के खिलाफ चलाये गये अभियान द्वारा खूब ख्याति व नाम कमाया।

सम्मानित शिक्षाविद, समाज सुधार प्रचारक, अविवादित व्यक्तित्व तथा एक महान वक्ता के रूप में श्री सत्यार्थी जी का प्रस्तावित नाम कोई भी राजनीतिक दल खारिज नहीं कर सकता। राष्ट्रपति पद के लिए उनकी पात्रता/योग्यता और विश्वशनीयता को न ही तो कम आंका जा सकता है और न ही कोई प्रश्न उठाया जा सकता है। चुनाव जुलाई में होने वाला है। दिल्ली के सांसद समूह, श्री सत्यार्थी, जो स्वयं दिल्ली के निवासी है को जिताने के लिये सुविधा व समर्थन प्रदान कर सकते है। ऐसे में आर्य समाज गोर्वातिक होगा। डॉ. सत्यार्थी तथा उनके परिवार आर्य समाज से सबंधित है (निष्ठावान आर्यसमाजी चौधरी चरन सिंह के प्रधानमंत्री बनने पर और श्री बलराम जाखड़ के पालिर्यामेन्ट स्पीकर बनने पर आर्य समाज को बहुत बड़ा फक्र हासिल हुआ) यदि डॉ. सत्यार्थी राष्ट्रपति बन जाते है तो आर्य समाज को एक बडा सम्मान मिलेगा।

63वर्षीय सत्यार्थीजीनेबाल–बालिकाओं की सुरक्षा, हेतु स्वयं संचालित विश्वव्यापी आन्दोलन'' बचपन बचाओं'' का भारत ने ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने भी इनके अभूतपूर्व कार्य की प्रशंसा की , श्री सत्यार्थी जी द्वारा चलाये गये बच्चों के उत्थान से सम्बन्धित कार्यक्रमों को अनेक देशों ने प्रशासनिक मान्यता प्रदान की। बाल–शोधन के दुर्प्रभाव के विरोध तथा उनके मौलिक अधिकार की सुरक्षा के अभ्यान के फलस्वरूप श्री सत्यार्थी जी को अनेक देशों ने विश्वविख्यात पुरस्कारों से सुशोभित किया। उनको विश्व का सर्वोच्च ''नोबल शान्ति पुरस्कार'' का भी गौरव प्राप्त हुआ।

जे.पी. सिन्हा
83, डाक्टर्स कॉलोनी जयपुर–302021
मो. 8769043201

****

समर्पण दिवस की सार्थकता महात्मा हंसराज के जीवन मूल्यों को धारण कर वेद प्रचार-प्रसार से होगी

डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल जयपुर के प्रांगण में महात्मा हंसराज जी की पावन जयन्ती के उपलक्ष्य में अभूतपूर्व महासम्मेलन का आयोजन संपन्न हुआ। इसमें सर्वप्रथम प्रधान श्री पूनम सूरी जी के यजमानत्व में बृहद् दैनिक यज्ञ का भव्य यज्ञशाला में अनुष्ठान किया गया। तदनन्तर महात्मा हंसराज समर्पण दिवस का महासम्मेलन प्रारम्भ हुआ।

समारोह में महात्मा हंसराज जी के व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्य पर लगभग 800 छात्र छात्राओं ने नाटकीय मंचन द्वारा बहुत ही प्रभावोत्पादक सम्पन्न किया। साथ ही वेद, आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का सरल सारगर्भित प्रभावोत्पादक शैली में प्रस्तुती आनन्दवर्धनी रही। अनेक साधु महात्माओं, संन्यासियों तथा वैदिक विद्वानों का आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी पद्मश्री द्वारा सम्मानित किया जाना एक उच्चकोटि की अविस्मरणीय परम्परा है।

प्रधान श्री पूनम सूरी ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में स्व अर्न्तहृदय की भावना को अभिव्यक्त करते हुए यह कहा कि **सम्पूर्ण भारतवर्ष में 914 डी.ए.वी. संस्थायें** हैं जिनमें शिक्षक, कार्यकर्ता, कर्मचारी तथा लाखों विद्यार्थी हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि समस्त डी.ए.वी. संस्थागत शिक्षक, कार्यकर्ता, कर्मचारी, विद्यार्थी वर्ग में वेद, आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों को जीवन के आचरण में लाए। यह गुरुतर कार्य (प्रधान जी की अभिलाषा) तब ही सम्पन्न किया जा सकता है। जब समग्र डी.ए.वी. परिवार तथा आर्यसमाज के शुभचिन्तक अनुयायी सज्जन सब मिलकर उक्त इच्छा को मूर्तरूप देने की भावना को हृदयंगम करके स्वजीवन में अपनाने का दृढ़व्रती होवें।

यह बड़ा उदात्त संयोग है कि श्री पूनम सूरी वैदिक सिद्धान्तों को जहाँ स्वजीवन के आचरण में ला रहे हैं वहीं अन्यों को उन सिद्धान्तों को जीवन में अनुस्यूत करने को निरन्तर प्रेरणा भी प्रदान कर रहें हैं। हम सभी आर्यों, महर्षि के भक्तों तथा वेदानुयायियों को प्रधान जी की अन्तर्वेदना को समझकर, उनके आह्वान को पूर्ण करने के लिये अहर्निश प्रयत्नशील होना चाहिये।

अन्त में मैं यह कह सकता हूँ कि महात्मा हंसराज जी का समर्पण दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम सभी प्रधान श्री पूनम सूरी जी एवं महात्मा हंसराज जी के वैदिक जीवन एवं कर्त्तव्य से प्रेरणा प्राप्त कर स्वजीवन को वैदिक सिद्धान्तों से ओत प्रोत कर सर्वत्र वेद प्रचार प्रसार में अपना यथोचित योगदान प्रदान कर धर्मलाभ के भागी बनें।

डॉ. कृष्णा पाल सिंह
E–128 गोविन्द पुरी, राम नगर, सोडाला, जयपुर, मो. 9414543976

****

गुरुकुल पौंधा में 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

गुरुकुल पौंधा देहरादून में आयोजित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्वाध्याय शिविर में आर्य विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री जी ने बताया कि सांख्य दर्शन में जड़ व चेतन का विवेचन है। आपने एक अन्धे व एक लंगड़े की कथा सुनाई और कहा अन्धा व लगड़ा एक दूसरे की सहायता करके अर्थात् अन्धा लंगड़े को अपने कन्धे पर बैठाकर दोनों गन्तव्य पर पहुंच सकते हैं। आचार्य जी ने शरीर और आत्मा का उदाहरण देकर कहा कि आत्मा भी अन्धे शरीर की सहायता से अपने लक्ष्य धर्म अर्थ काम ने शरीर और आत्मा का उदाहरण देकर कहा कि आत्मा भी अन्धे शरीर की सहायता से अपने लक्ष्य धर्म अर्थ काम व

मोक्ष की प्राप्ति करता है। **आचार्य जी ने कहा कि ''जहाँ ईश्वर, जीव और प्रकृति का विवेचन किया जाता है उसे सत्संग कहते है।** परमात्मा का कोई भी निर्णय गलत नही होता क्योंकि वह सबका हर काल में साक्षी होता है।''

आचार्य जी ने स्वस्थ व अस्वस्थ मनुष्य की मीमांसा की व उसके अनेक उदाहरण दिये। उन्होंने कहा कि कोई मनुष्य मकान की प्राप्ति तो कोई शरीर के रोगों में टिका हुआ है। चिकित्सा शास्त्र का उल्लेख कर आचार्य जी ने कहा कि शरीर में रोग के दो कारण होते हैं। शारीरिक व मानसिक। जीवन में प्रसन्नता की अल्पता भी शरीर को रोगी बनाती है। अतः मनुष्य को प्रसन्न रहने का अभ्यास करना चाहिए जिससे वह अस्वस्थ न हो। आचार्य जी ने कहा कि जीवात्मा अपने स्वरूप सत्य व चित्त में स्थिर व स्थित नहीं हो सकता। मन को ईश्वर में लगाने से मन में निर्मलता आती है। जो परमात्मा का चिन्तन नहीं करते उनके मन में कलुषता आती है। आचार्य जी ने पांच वृत्तियों प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय व प्रमा आदि की भी चर्चा की व उनके स्वरूप पर प्रकाश डाला और इसके उदाहरण भी दिये।

पुस्तक समीक्षा

पिछले दिनों एक पुस्तक का आर्य समाज फाजिल्का में विमोचन किया गया जिसका विषय था–

''महर्षि दयानन्द के पंच महायज्ञों का विनियोगात्मक अध्ययन''

इस पुस्तक के लेखक हैं डा. सुशील कुमार वर्मा, पुस्तक के प्रकाशक हैं आस्था प्रकाशन, दिल्ली (मकान न. 102 गली न. 1, गाँव गढ़ी मैण्डू भजनपुरा दिल्ली–110053)

इस पुस्तक में लेखक ने यज्ञों की श्रृंखला में मनु महर्षि के समय से प्रचलित पंच महायज्ञों के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा जो यज्ञ विधि निर्धारित की गई है, उस पर विवेचनात्मक एवं विनियोगात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। ''पंचैतांस्तु महायज्ञान् यथा शक्ति न हापयेत'' का परिपालन करते हुए स्वामी जी ने वेदार्थ को प्रमुख स्थान देकर सार्थक विनियोग प्रयुक्त किया– इस तथ्य को इस पुस्तक में प्रमाणित किया गया है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक यज्ञ की विवेचना बड़ी ही सार्थक एवं तलस्पर्शी तथ्यों द्वारा की गई है। यज्ञों में प्रचलित क्रियाएं क्यों और कैसे की जाती हैं? इसका स्पष्टीकरण आधिभौतिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया है। क्रिया के साथ मन्त्र की सार्थकता ही स्वामी जी की विलक्षणता है जिसको लेखक ने पूर्णरूपेण प्रमाणित किया।

आर्य जगत में यज्ञ विधि तो प्रत्येक पुस्तक में प्राप्य है। परन्तु प्रत्येक क्रिया सम्बन्धित मन्त्र एवं उनकी सार्थकता एवं वैज्ञानिकता की प्रस्तुतिकरण इस पुस्तक की विशेषता है।

जहाँ तक लेखक का सम्बन्ध है वह वैज्ञानिक विचारधारा से प्रवृत हैं क्योंकि वह M.Sc. (How) Botany हैं साथ ही साथ आर्य परिवार से सम्बन्धित होने के कारण वैदिक परम्पराओं के प्रति आस्थावान भी है। इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए उन्होंने गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से M.A. (वेद) स्वर्णपदक लब्ध एवं Ph.d की डिग्री प्राप्त की। वह आर्य समाज में बहुत समय तक प्रधान पद पर रहे और वर्तमान में संरक्षक पद पर कार्यरत हैं। उनका मुख्य उद्देश्य ही वेद प्रचार हेतु लेखन एवं प्रवचन है।

डॉ. नवदीप जसूजा
प्रधान आर्य समाज
फाज़िल्का–152123

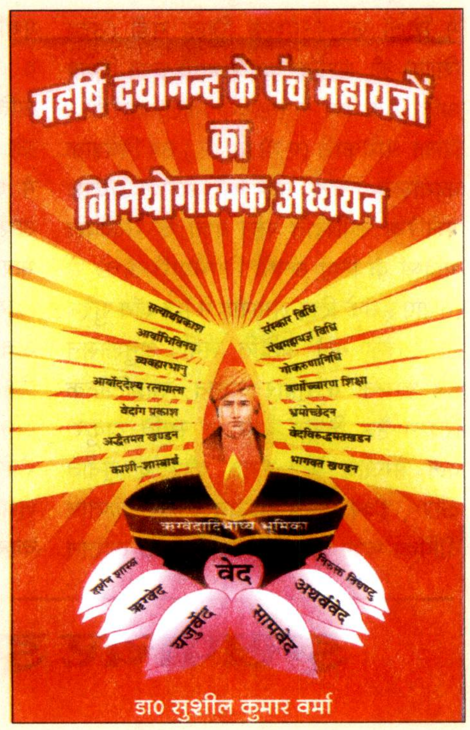

आर्य वीर दल राजस्थान के प्रान्तीय शिविर का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय अलवर के परिसर में चल रहे आठ दिवसीय प्रान्तीय योग व्यायाम, व चरित्र निर्माण शिविर का दीक्षान्त समारोह धूम धाम से सम्पन्न हो गया।

समारोह के प्रारम्भ में पुलिस उपाधीक्षक श्री यशपाल त्रिपाठी ने आर्य वीरों की सुसज्जित परेड का निरीक्षण किया। मार्च पास्ट करते हुए आर्यवीरों ने मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह को सलामी दी। तदुपरान्त 200 आर्यवीरों ने सामूहिक रूप से नियुद्धम (जूडो–करॉटे) सर्वांग सुन्दर व्यायाम, भूमिनमस्कार, सूर्यनमस्कार का प्रदर्शन किया। दण्ड–बैठक, लाठी एवं योगासनों का भी मनमोहक प्रदर्शन किया गया। ब्रह्मचारी सचिन ने गले एवं आँख से सरियों को मोड़कर दिखाया, हाथ से कांच पीसा गया जिन्हें देखकर लोग आश्चर्य चकित हो गये।

मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह ने आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालते हुए। कहा कि देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में आर्य समाज की प्रमुख भूमिका रही है। आज भी देश को सांस्कृतिक प्रदूषण से बचाने में आर्य समाज और आर्यवीर दल प्रमुख भूमिका निभा रहा है।

समारोह में लालपुर आश्रम के स्वामी सुधानन्द योगी ने भी आर्यवीरों को आर्शीवाद दिया। पुनः पुरस्कार वितरण व ध्वजावतरण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने की। मंच संचालन आर्यवीर दल के प्रान्तीय संचालक सत्यवीर आर्य ने किया।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 14/15-06-2017

मोतियाबिंद ऑप्रेशन हेतु हेल्प एज इंडिया को डी.ए.वी. पटेल नगर द्वारा आर्थिक सहायता

Help Age India द्वारा चलाए गए अभियान Help him see again के अर्न्तगत आंखों में मोतियाबिंद आपरेशन की सहायता के लिए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पश्चिमी पटेल नगर के बच्चों तथा अध्यापिकाओं ने भी एक छोटी सी सहायता की। पाठशाला के वार्षिक उत्सव 14 फरवरी 2017 को प्रधानाचार्या रश्मि डॉ. गुप्ता ने डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री

समिति के प्रधान पूनम सूरी जी के कर–कमलों से Help Age India के मैनेजर नरेन्द्र सिंह जी को बीस हजार का चैक सहायता राशि में दिया। यह धन बच्चों ने बेकार वस्तुओं को नया रुप देकर कुछ आकर्षक जैसे कार्ड, मोमबत्ती, पर्स आदि बनाकर पाठशाला में ही बेचकर इकट्ठा किया था। शेष धन राशि अध्यापिकाओं का योगदान था।

डी.ए.वी. सी.पी.एस. मंडी में अलंकरण समारोह

गत, 24 मई, 2017 को डी.ए.वी. सी. पी. एस. मंडी में अलंकरण समारोह मनाया गया। इस समारोह में मुख्यातिथि के रूप में शिक्षा उप–निदेशक जिला मंडी (उच्च शिक्षा) श्री अशोक कुमार शर्मा तथा विशेष अतिथि के रूप में सहायक जिला शारीरिक शिक्षा अधिकारी (ए.डी.पी.ओ.) उप निदेशक कार्यालय जिला मंडी श्री अनिल प्रकाश गुलेरिया उपस्थित रहे। बच्चे के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी जिम्मेदारी अच्छे से निभाए इसके लिए समारोह में हैड बॉय सुरेन गुप्ता, हैड गर्ल अदिति शर्मा, अनुशासन हैड तमन्ना व तुषार आनंद, साइंटिफिक स्किल हैड चिराग बैद्य व स्मृति ठाकुर, वैल मैग्जीन हैड बंसत कौर व गुनीत कौर , इको क्लब कप्तान व उप–कप्तान दीपिका राणा व जय गुप्ता, स्पोर्ट्स कप्तान व उप–कप्तान आर्यन जम्वाल व शिवोम कपूर, स्कूल मैग्जीन प्रांजल व मेधावी गुप्ता, एथेटिक्स में इन्द्रजीत व कुमारिल। इसके अतिरिक्त विद्यालय की अन्य गतिविधियों में अभ्युदय, वंशिका, आशुतोष, मृत्युंजय, भारत, अमनप्रीत, दिव्यांशी, देविका, अचल, रितिका, रिदम, जीवेश, उत्कर्ष,

तनिषा, निहारिका, वारुनी, लक्ष्य, संस्कृति, रोहित, प्रत्या, रिदम, शुभेंदु, नंदिनी, पंकज, शुभांगी, इशिता, चिन्मय, अंशिका, रिद्धि, कल्याणी, नम्रता, सव्यासाची, अपूर्वा, मेघना, आर्यन, प्राची, संजीवनी, दिव्यम, नंदिनी, प्रथम, सान्या, तपूर, नमन, इशार, अन्विक्षा, वैष्णवी, पूरव, सोरेन, राघवी, आर्यन इत्यादि विद्यार्थियों का चयन किया गया व उन्हें शपथ भी दिलवाई गई। समारोह का शुभारंभ प्रार्थना सभा से हुआ। छात्रों के चयन के उपरांत मुख्यातिथि ने बच्चों को स्मरण चिह्न देते हुए अपना सन्देश व शुभाशीष दिया।

इन्सपायर इन्टर्नशिप प्रोग्राम में डी.ए.वी. सोनीपत के बाल वैज्ञानिक

प्रतिवर्ष (डी.एस.टी.) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में पाँच दिवसीय इन्सपायर इन्टर्नशिप प्रोग्राम का आयोजन किया जाता है। इस बार यह पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़ में आयोजित किया गया जिसमें डी.ए.वी. मल्टीपर्पज पब्लिक स्कूल सोनीपत के 11 बाल–वैज्ञानिकों (प्राची गुप्ता, प्रिया, अतुल, सुरभी पाठक, राशि, के. निहारिका, आर्यन सहरावत, युवराज जेतली, अक्षय, मानसी, वर्तिका) दल ने अपनी शिक्षिका श्रीमती अंजु शर्मा के मार्गदर्शन में भाग लिया। इस प्रोग्राम की खास बात यह रही कि नोबल पुरस्कार से पुरस्कृत प्रोफेसर रोजर डी. कॉनबर्ग के साथ रह कर उनसे वैज्ञानिक विषयों की जानकारी ली साथ ही दूर–दूर से आये सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों डॉ. अनुराग कुहाद, अरुण डी. अहलूवालिया, के सम्पर्क में रहे तथा इस अवसर पर उनके द्वारा दिये गये सम्बोधन से लाभान्वित हुए । इसके अतिरिक्त प्रश्नोत्तरकाल में सभी बाल वैज्ञानिकों ने प्रश्नों के माध्यम से अपनी शंकाओं का

समाधान किया। सभी बाल– वैज्ञानिकों को गिफ्ट हैम्फर्स के साथ प्रमाण–पत्र प्रदान किये गये।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**